सेन्ट्रल मंथन

• खंड 6 • अंक - 2 • सितंबर-दिसंबर, 2021

75

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

14 नवंबर, 2021 को श्री एम.वी. राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा भोपाल प्रवास के दौरान मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से शिष्टाचार भेंट की. इस अवसर पर श्री शिवराज सिंह चौहान को पुष्प गुच्छ प्रदान कर सम्मान करते हुए हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री एम.वी. राव एवं उनके साथ दिखाई दे रहें है श्री एस डी माहुरकर, फील्ड महाप्रबंधक भोपाल अंचल.

केन्द्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित ई राजभाषा सम्मेलन के दौरान मंच पर आसीन श्री एम. वी. राव, प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, दाये श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक, बायें श्री राजीव पुरी, कार्यपालक निदेशक, पीछे महाप्रबंधक श्री मयंक शाह, श्री स्मृति रंजन दाश, श्री एस आर खटीक, फील्ड महाप्रबंधक एमएमजेडओ, श्री वास्ति वेंकटेश, श्री एच एस गरसा, श्री गोपीनाथन एवं सुश्री नमिता रॉय शर्मा.

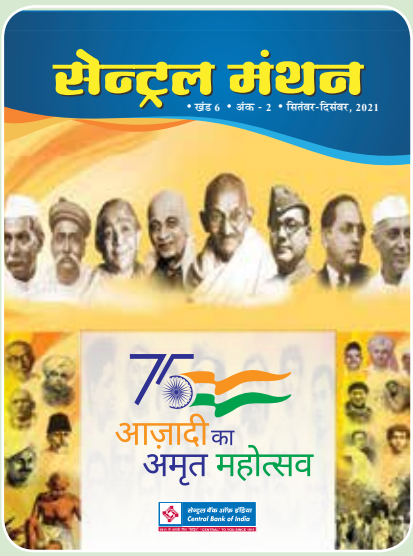

प्रधान संरक्षक
श्री एम. वी. राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक
श्री आलोक श्रीवास्तव
कार्यपालक निदेशक
श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक
श्री राजीव पुरी
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक
श्री स्मृति रंजन दाश
महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा)

संपादक
श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक
सुश्री छाया पुराणिक
सुश्री मधुलिका कांबले
श्री अभय कुलकर्णी

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका
• खंड 6 • अंक - 2 • सितंबर-दिसंबर, 2021

विषय-सूची

▶ प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 2
▶ कार्यपालक निदेशक का संदेश 3
▶ महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश 4
▶ संपादकीय 5
▶ इतिहास के पन्नों में गुम हुए हमारे स्वतंत्रता सेनानी 6
▶ एकीकृत लोकपाल योजना 2021 8
▶ कोरोना काल एवं ब्रेन फॉग 9
▶ भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष 11
▶ जरुरत 15
▶ नवीनतम तकनीक एवं बैंकिंग 17
▶ कविता - रंग बिरंगी मैं तितली सी 20
▶ कविता - आज कल की जनरेशन 21
▶ हिन्दी दिवस - केन्द्रीय कार्यालय 22
▶ स्वतंत्रता दिवस - 15 अगस्त 2021 23
▶ संस्थापक जयंती - 9 अगस्त 2021 24
▶ हिन्दी दिवस - आंचलिक कार्यालय 25
▶ हिन्दी दिवस - क्षेत्रीय कार्यालय 26
▶ राजभाषा समाचार 27
▶ सकर्तता जागरूकता सप्ताह 30
▶ बैंक का स्थापना दिवस - 21.12.2021 31
▶ आउटरीच कार्यक्रम 32
▶ बैंक के इर्द-गिर्द 33
▶ भारत के सबसे युवा क्रांतिकारी शहीद खुदीराम बोस का जीवन-वृत्त 35
▶ मध्यप्रदेश का जननायक टंट्या भील उर्फ 'टंटिया मामा ' 37
▶ उस दिन मैंने भी पतंग काटी थी.... 39

प्रत्येक पृष्ठ पर प्रदर्शित भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों के विवरण के प्रस्तुतकर्ता श्री रश्मि रंजन, प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, मोतीहारी

ई-मेल/Email : centralmanthan@centralbank.co.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यतः बैंक के नहीं हैं.

डिज़ाइन, संपादित तथा प्रकाशित : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम भारत राष्ट्र के 73वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं.

एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में, आगामी 15 अगस्त 2022 को हमारी स्वतंत्रता के पिचहत्तर वर्ष पूरे हो जायेंगे. परिणाम स्वरूप, इस वर्ष, देशभर में भारत की ''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' मनाया जा रहा है. विदेशी शासन के विरुद्ध स्वाधीनता के लिये संघर्ष करने वाले हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों की आंखों में स्वतंत्र भारत के नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिये अनेकानेक सपने थे. स्वतंत्र भारत ने उन्हीं सपनों को पूरा करने के लिये योजनाएं तैयार की. उन योजनाओं को क्रियान्वित किया. जिसके फलस्वरूप भारत क्रमश: प्रगति की राह पर आगे बढ़ता जा रहा है.

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत, अत्यंत विविधतापूर्ण देश है. जहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं. यहां विभिन्न धर्मों और मतों के अनुयायी रहते हैं. यहां विभिन्न जातियों, उपजातियों, समाजों, वर्गों का सह अस्तित्व है. इतनी विविधताओं में एकता भारत की सबसे बड़ी विशेषता है. इसकी खूबसूरती है. जो पूरी दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करती है.

आज पूरी दुनिया में भारतीयों की प्रतिभा का सम्मान हो रहा है. प्रतिभाशाली भारतीयों द्वारा नवोन्मेष स्टार्ट अप लगाये जा रहे हैं. जिनकी प्रगति से दुनिया प्रभावित हो रही है. भारतीय नागरिकों ने अपने ज्ञान, अपनी योग्यता, अपनी दक्षता और अपने परिश्रम के बल से भारत को प्रगति के पथ पर तीव्र गति से आगे बढाया है. कृषि के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाया है. भारत को विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में सम्मिलित करवा दिया है तथा इसे और बड़ा करने के प्रयास जारी हैं.

सभी सेन्ट्रलाइट, पूर्णत: स्वदेशी सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के माध्यम से समस्त भारतवासियों को विनम्र भाव से उत्कृष्ट बैंकिंग सेवाएं प्रदान करें. पुराने ग्राहकों को पुन: बैंक से जोड़ें. हर शाखा स्तर पर हम एक टीम के रूप में काम करें. अपनी-अपनी शाखाओं को लाभदायक बनायें. दिये गये लक्ष्यों को प्राप्त करें. इस तरह निश्चित रूप से हमारा बैंक अपनी गौरवशाली स्थिति को प्राप्त करेगा. साथ ही भारत राष्ट्र की प्रगति में अपना अधिक से अधिक योगदान प्रदान करेगा.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम. वी. राव)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

भारत के लिये वर्तमान वर्ष बहुत विशेष है जब पूरा देश ''आज़ादी का अमृत महोत्सव'' मना रहा है. किसी भी राष्ट्र की अखण्डता उसके नागरिकों की एकता में निहित होती है, क्योंकि शत्रु दुर्बलता का लाभ उठाने को सदैव तैयार रहते हैं. कई शताब्दियों पूर्व विदेशियों ने ऐसे ही अवसर पर हमारे देश की शासन व्यवस्था पर नियंत्रण कर लिया. जो दीर्घकाल तक चला. भारतवासियों ने स्वयं को पुन: संगठित किया और एकजुट होकर विदेशी शासकों से संघर्ष किया. अंतत: जिस ब्रिटिश शासन में कभी सूरज नहीं डूबता था वे अत्यंत शक्तिशाली शासक भारतीयों के समक्ष झुके एवं दिनांक 15 अगस्त 1947 को हमारा महान भारत स्वतंत्र हुआ.

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीयों ने अपनी एकता के साथ अनेक चुनौतियों का सफलता पूर्वक सामना किया. सह अस्तित्व की अवधारणा को मानने वाले शांतिप्रिय भारत देश ने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया, लेकिन फिर भी शत्रुओं के हमलों का उनकी ही भाषा में जबाव देते हुये कई युद्ध लड़े और उनमें विजय प्राप्त की. यह भारतवासियों की परस्पर एकता का ही परिणाम है कि नस्लवाद एवं आतंकवाद का भी साहसपूर्वक मुकाबला तो किया ही है साथ ही उसे देश में पनपने भी नहीं दिया है.

अनेक चुनौतियों के मध्य भी भारत जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति के पथ पर लगातार आगे बढ़ता जा रहा है. भारत के कृषकों ने देश को खाद्यान्नों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया है. वहीं हमारे वीर सैनिकों ने शत्रुओं से भारतीय सीमाओं की सुरक्षा की है.

अब भी वर्तमान भारत के समक्ष अनेक प्रकार की चुनौतियां हैं. सभी नागरिकों को रोटी, कपड़ा, मकान, चिकित्सा एवं शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था करना. घर - घर में बिजली और पेयजल पहुंचना. प्रदुषण एवं भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण का निर्माण, ऊर्जा में आत्मनिर्भरता, त्वरित न्यायिक प्रक्रिया इत्यादि क्षेत्रों में बहुत कार्य किया जाना है. इन सब पर काम चल रहा है. आशा की जाती है कि भारत अपने परिश्रमी युवाओं की शक्ति के माध्यम से ऐसे सभी कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न कर पायेगा. एक श्रेष्ठ भारत के निर्माण में सभी भारत वासियों का योगदान देना आवश्यक है. हम सभी के योगदान से ही हमारा भारत विश्व का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनेगा.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

आलोक श्रीवास्तव
कार्यपालक निदेशक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

प्रिय सेंट्रलाइट मित्रों,

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है और हिन्दी संघ सरकार की राजभाषा है. देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भाषा को 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई. आज भारत सरकार के शासकीय कार्यों हेतु हिंदी आधिकारिक भाषा है, राजभाषा है. तदनुसार प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि हिंदी में कामकाज को बढावा दें. हम सबको यह समझना चाहिए कि हिन्दी हमारी पहचान है. हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से देश को एकसूत्र में पिरोये रखने का प्रयास है ताकि हमारे देश की एकता और अखंडता अक्षुण्ण रहे. भाषा के माध्यम से हमारे देश की संस्कृति बनी रहे तथा हममें देशभक्ति की भावना का निर्माण हो यही भारत सरकार का उद्देश्य है.

हम चूंकि व्यवसायिक क्षेत्र में काम करते हैं इसलिए हमें जनता की भाषा में काम करना आवश्यक है, ताकि हमारी विभिन्न योजनाओं को आम जनता तक आसानी से पहुंचाकर हम व्यवसाय अर्जन कर सकें और हमारे ग्राहक भी इन्हें समझकर सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ ले सकें. यदि हम जनता की भाषा में काम करेंगे तो हम आम जनता में अधिक स्वीकार्य होंगे और व्यवसाय के साथ-साथ हम लाभ अर्जन में सफल होंगे.

हमें ज्ञात है कि हिंदी कश्मीर से कन्याकुमारी तक बोली एवं समझी जाती है. अत: अब संपूर्ण भारत में हिंदी में काम करने में अब कोई दिक्कत नहीं है. हिंदी के प्रचार-प्रसार का काम तकनीकी के माध्यम से और आसान हो गया है. यूनिकोड की सहायता से हम अब कोई भी संदेश कंप्यूटर पर आसानी से तैयार कर संपूर्ण विश्व में कहीं पर भी सहजता से भेज सकते हैं और यह कहीं पर भी सरलता से पढा भी जा सकता है. इसलिए अब पत्राचार तथा दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग में अब कोई कठिनाई नहीं है केवल आवश्यकता है हमारी दृढ इच्छाशक्ति की. इसलिए भी हिंदी के उपयोग का महत्व और भी बढ जाता है. यह स्मरण रखना चाहिए कि हमें अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर हिंदी को विश्व की अग्रणी भाषा बनाने के प्रयासों में अपना ठोस योगदान देना है.

हम सभी को ज्ञात है कि भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार हिंदी में काम करने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं भी हमारे बैंक में उपलब्ध है. इनका भी यही उद्देश्य है कि हम अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग करें. हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारत सरकार की भी यही मनिषा है कि हम अपने देश की भाषा में काम करते हुए अपने आप को गौरवान्वित महसूस करें. अपनी भाषा में काम करने का एक और लाभ यह है कि हम अपने विचार मूल रूप से व्यक्त कर सकते हैं जिससे हमारा संप्रेषण भी सरल तथा उपयोगी हो जाता है जाता है. हम जो कहना चाहते है वह विचार पानेवाला आसानी से समझते हुए उसपर अपनी प्रतिक्रिया उसी प्रकार देता है जो कि एक सफल संप्रेषण का मूलतत्व भी है. हमारे दैनिक व्यवहार में यदि हम हमारे संप्रेषण में हिंदी भाषा के आधार पर स्पष्टता रखें तो हमारे बैंक की योजनाएं आसानी से हमारे लक्ष्य ग्राहक समूह तक पहुंचाते हुए हम इनमें भारी सफलता प्राप्त कर सकते हैं.

हार्दिक शुभकामनाएं.

स्मृति रंजन दाश

संपादक/महाप्रबंधक (मासंवि/राजभाषा)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संपादकीय

प्रिय साथियो,

देशभर में भारत की आजादी का अमृत महोत्सव उत्साह पूर्वक जारी है. सेन्ट्रल मंथन का यह अंक भी ''आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक'' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है.

स्वतंत्रता मानव समाज की अमूल्य निधि है. पूर्व में शक्तिशाली विस्तारवादी शासक दूसरे राज्यों को छल-बल से हराकर उन पर अपना शासन स्थापित कर लेते थे. कई सदी पूर्व भारत के साथ भी कुछ इसी तरह घटित हुआ और विदेशी आक्रमणकारी तथा व्यापारी छल - बल से हमारे देश के शासक बन गये. विभिन्न क्षेत्रों के हमारे वीर और स्वाभिमानी पूर्वजों ने उनका डटकर मुकाबला किया. विदेशियों को बार-बार हराकर अपना राज्य वापस प्राप्त किया. उस दौरान यह संघर्ष अलग अलग राजाओं द्वारा अपने-अपने राज्यों के लिये किया जाता था. पराजित विदेशी शासक नये छल-बल से पुन: सत्ता हथिया लेते थे. क्रमश: भारतीयों के मध्य एकता का भाव प्रबल हुआ और वे संपूर्ण भारत को विदेशी शक्ति से मुक्त करवाने के लिये एकजुट होकर संघर्ष करने लगे.

स्वतंत्रता के लिये एकजुट भारतीयों का संघर्ष भी यद्यपि आसान नहीं था. देश के कोने-कोने से अनेकों भारतीयो ने अपने प्राणों की आहुति दी. बहुत से युवा सेनानी फांसी के फंदे पर लटकाये गये. अनेक स्वतंत्रता सेनानी सजा के तौर पर कालापानी गये. असंख्य ने कारावास की सजा भुगती. विदेशी शासकों द्वारा भयंकर अत्याचारों के बाद भी देश की आज़ादी के दीवाने युवाओं ने हार नहीं मानी और संघर्ष निरंतर जारी रखा, अंतत: 15 अगस्त 1947 को हमारा प्रिय भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया. अब हम एक स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक हैं. हमारी पीढ़ी को यह स्वतंत्रता विरासत में मिली है. अगली पीढ़ी के लिये इसे संजोकर रखना हमारा पुनीत कर्तव्य है. जिसके लिये भारतीयों के मध्य परस्पर एकता आवश्यक है, जो हमें बनाये रखनी होगी.

हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम अपने प्रिय भारत को प्रगति के पथ पर तीव्र गति से अग्रसरित करें. हम स्वतंत्रता की सही भावना के अनुरूप, अनुशासन में रहकर कार्य करें. हम भ्रष्टाचार को न पनपने दें. ईमानदारी से कार्य करें. परिश्रम से कार्य करें. अपने कर्तव्य का निर्वहन करें. किसी भी सुविधा के लिये अपनी बारी की प्रतिक्षा करें. किसी का हक न छीनें. न गलत करें और न गलत का साथ दें. भारत को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाने के क्रम में यथा सम्भव योगदान दें.

आपके विचार, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित है.

अभिवादन सहित,

राजीव वार्ष्णेय

सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

इतिहास के पन्नों में गुम हुए हमारे स्वतंत्रता सेनानी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

- सुश्री स्मिता बोलूर
सहायक प्रबंधक, एसपीबीटी महाविद्यालय,
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

हम जानते हैं कि महात्मा गांधी, भगत सिंह, रानी लक्ष्मी बाई, बाल गंगाधर टिळक, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, मंगल पांडे और सरदार वल्लभ पटेल इत्यादी जैसे वीर स्वतंत्रता सेनानियों ने आजादी के मार्ग को प्रशस्त किया है. लेकिन इन नामों के अलावा कुछ ऐसे नाम भी हैं, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया था. स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ पर आइए हम आपको ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बताते हैं जो इतिहास के पन्नों में कहीं गुम हो गए है.

1. **मातंगिनी हाजरा-** एक ऐसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थी जिन्होंने भारत छोडो आंदोलन और असहयोग आंदोलन के दौरान भाग लिया था. एक जुलूस के दौरान वे भारतीय झंडे को लेकर आगे बढ़ रही थीं और पुलिसकर्मियों ने उनपर गोली चला दी. उनके शरीर में तीन गोलियां लगीं फिर भी उन्होंने झंडा नहीं छोड़ा और वे 'वंदे मातरम्' के नारे लगाती रहीं.

2. **बेगम हजरत महल-** अवध के नवाब की पत्नी बेगम हजरत महल 1857 के विद्रोह की सक्रिय नेता थीं. जब उनके पति को देश से बाहर निकाल दिया तो उन्होंने अवध का शासन संभाल लिया और विद्रोह के दौरान उन्होंने लखनऊ को अंग्रेजी नियंत्रण से भी छीन लिया था. लेकिन विद्रोह के कुचले जाने के बाद बेगम हजरत महल को भारत छोड़कर नेपाल में रहना पड़ा, जहां उनका देहांत हुआ था.

3. **सेनापति बापट-** सत्याग्रह के एक नेता होने के कारण उन्हें सेनापति कहा जाता था. स्वतंत्रता के बाद पहली बार उन्हें पुणे में भारतीय ध्वज को फहराने का सम्मान मिला था. तोड़फोड़ और सरकार के खिलाफ भाषण करने के कारण उन्होंने खुद की गिरफ्तारी दी थी. वे एक सत्याग्रही थे जोकि हिंसा का मार्ग नहीं चुन सकते थे.

4. **अरुणा आसफ अली-** बहुत कम लोग ने उनके बारे में यह जानते होंगे कि जब वे 33 वर्ष की थीं तब उन्होंने सन 1942 में भारत छोड़ो

महात्मा गांधी

मोहनदास करमचंद गांधी एक भारतीय वकील, उपनिवेशवाद-विरोधी राष्ट्रवादी और राजनीतिक नैतिकतावादी थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए सफल अभियान का नेतृत्व करने और बाद में दुनिया भर में नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए आंदोलनों को प्रेरित करने के लिए अहिंसक प्रतिरोध का इस्तेमाल किया.

आंदोलन के दौरान गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज फहराया था.

5. **पोटी श्रीरामुलू-** वे महात्मा गांधी के कट्टर समर्थक और भक्त थे. जब गांधीजी ने देश और मानवीय उद्देश्यों के प्रति उनकी निष्ठा देखी तो कहा था कि 'अगर मेरे पास श्रीरामुलू जैसे 11 और समर्थक आ जाएं तो मैं एक वर्ष में स्वतंत्रता हासिल कर लूंगा.'

6. **भीकाजी कामा-** देश के कई शहरों में उनके नाम पर बहुत सारी सड़कें और भवन हैं लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि वे कौन थीं और उन्होंने क्या काम किया? कामा ने न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान किया वरन वे भारत जैसे देश में एक लैंगिक समानता की पक्षधर नेता थीं. उन्होंने अपनी सम्पत्ति का एक बड़ा भाग लड़कियों के लिए अनाथालय बनाने पर खर्च किया था. वर्ष 1907 में उन्होंने इंटरनेशनल सोशलिस्ट कॉन्फ्रेंस, स्टुटगार्ट (जर्मनी) में भारत का झंडा फहराया था.

7. **तारा रानी श्रीवास्तव-** बिहार के सीवान नगर के पुलिस थाने पर उन्होंने अपने पति के साथ एक जुलूस का नेतृत्व किया था. उन्हें गोली मार दी गई थी लेकिन वे अपने घावों पर पट्टी बांधकर आगे चलती रहीं. जब वे लौटी तो उनकी मौत हो गई थी. लेकिन मरने से पहले वे देश के झंडे को लगातार पकड़े रहीं.

8. **कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी-** उन्हें कुलपति के नाम से भी जाना जाता था क्योंकि उन्होंने भारतीय विद्या भवन की स्थापना की थी. वे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और विशेष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बहुत सक्रिय रहे थे. स्वतंत्र भारत के प्रति उनके प्रेम और त्याग के कारण वे अनेक बार जेल गए.

9. **कमलादेवी चट्टोपाध्याय -** कमलादेवी देश की ऐसी पहली महिला थी जिन्होंने विधानसभा का चुनाव लड़ा था. साथ ही, वे पहली ऐसी महिला थी जिन्हें अंग्रेज शासन ने गिरफ्तार किया था. उन्होंने एक सामाजिक सुधारक के तौर पर बड़ी भूमिका निभाई और उन्होंने भारतीय महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए हस्तशिल्प, थिएटर और हैंडलूम्स (हथकरघे) को बहुत बढ़ावा दिया. वे भारत के शुरूआती विद्रोहियों में से एक थीं और उन्होंने 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया था. स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण उन्हें 14 अन्य लोगों के साथ फांसी की सजा दी गई थी.

10. **अवध बिहारी -** अवध बिहारी ये एक राष्ट्रवादी और स्वतंत्रता सेनानी थे. अवध बिहारी ब्रिटिश शासन के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे. अंग्रेजी हुकूमतों के खिलाफ अवध बिहारी ने उत्तर प्रदेश और पंजाब में मोर्चा संभाला था. अवध बिहारी ने ही ब्रिटिश अधिकारी लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाई थी, 1914 में गिरफ्तार कर लिया था और मौत की सजा सुनाई गई थी. अवध बिहारी को 1 मई 1915 को अंबाला सेन्ट्रल जेल में फांसी दी गई थी.

11. **खुदीराम बोस -** खुदीराम बोस अपने बचपन से ही ब्रिटिश शासकों के खिलाफ थे. खुदीराम बोस ने अंग्रेजों पर कई बम हमले किए थे. जिनमें सबसे प्रमुख था मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड पर किया गया बम हमला. ब्रिटिश शासकों के नाक में दम करने वाले खुदीराम बोस 19 साल की छोटी सी उम्र में ही शहीद हो गए थे. 11 अगस्त 1908 को बम हमलों के आरोप में खुदीराम बोस को मौत की सजा सुनाई गई थी. फांसी के वक्त उनकी उम्र 18 साल के करीब थी. फांसी से पहले उनके अंतिम शब्द थे, 'वंदे मातरम'.

12. **बटुकेश्वर दत्त -** बटुकेश्वर दत्त 1900 की शुरुआत में एक भारतीय क्रांतिकारी थे. व्यापार विवाद बिल के विरोध में बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली में 8 अप्रैल 1929 को केंद्रीय विधान सभा में भगत सिंह के लिए बम विस्फोट किए थे. उन्होंने भी इंकलाब जिंदाबाद का नारा दिया था.

13. **राम प्रसाद बिस्मिल -** राम प्रसाद बिस्मिल को प्रसिद्ध काकोरी रेल डकैती की साजिश का नेतृत्व करने के लिए याद किया जाता है. राम प्रसाद बिस्मिल क्रांतिकारी संगठन हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संस्थापक सदस्यों में से भी एक थे. स्वतंत्रता सेनानी होने के अलावा बिस्मिल उर्दू और अंग्रेजी के एक महान कवि और लेखक भी थे. काकोरी कांड में बिस्मिल को अशफाक उल्लाह खान और दो अन्य लोगों के साथ 19 दिसंबर, 1927 को 30 साल की उम्र में फांसी दी गई थी.

14. **उधम सिंह -** उधम सिंह ने जलियांवाला बाग हत्याकांड के पीछे जिम्मेदार शख्स जनरल माइकल डायर की हत्या की साजिश रची थी. कहा जाता है कि शहीद उधम सिंह ने जलियांवाला बाग नरसंहार देखने के बाद शपथ ली थी कि वह इसका बदला जरूर लेंगे. जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद उधम सिंह ने माइकल डायर की हत्या की. हालांकि, महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू दोनों ने उस समय उधम सिंह के बदले की भावना की निंदा की थी. महात्मा गांधी ने टिप्पणी की थी, आक्रोश ने मुझे गहरा दर्द दिया है. मैं इसे पागलपन का कार्य मानता हूं. उधम सिंह को 31 जुलाई 1940 को माइकल डायर की हत्या के लिए पेंटनविले जेल में फांसी दी गई थी.

सुभाष चंद्र बोस

एक सच्चे भारतीय राष्ट्रवादी थे, जिन्होंने अंगरेजी शासन के खिलाफ आवाज बुलंद की और आजाद हिन्द फौज की स्थापना की. उन्होंने भारतीयों को अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ लड़ने हेतु एक महत्वपूर्ण सेना का निर्माण किया. वे भारत के कुछ प्रान्तों को अंग्रेजी वर्चस्व से आजाद करवाने में सफल भी रहे.

एकीकृत लोकपाल योजना २०२१

- अमित रंजन
संकाय प्रमुख
सीएलडी, मुजफ्फरपुर

भारतीय रिज़र्व बैंक - एकीकृत लोकपाल योजना, 2021 माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 12 नवम्बर 2021 को लांच किया गया.

इस योजना में भारतीय रिज़र्व बैंक की मौजूदा तीन लोकपाल योजनाओं अर्थात,

i) बैंकिंग लोकपाल योजना, 2006

ii) गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के लिए लोकपाल योजना, 2018 और

iii) डिजिटल लेनदेन के लिए लोकपाल योजना, 2019 को एकीकृत किया गया है.

यह योजना, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित संस्थाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं में कमी से सम्बंधित ग्राहकों की शिकायतों का लागत-मुक्त निवारण प्रदान करेगी, यदि ग्राहकों की संतुष्टि तक समाधान नहीं किया गया या विनियमित संस्था द्वारा 30 दिनों की अवधि के भीतर जवाब नहीं दिया गया.

तीन मौजूदा योजनाओं को एकीकृत करने के आलावा इस योजना ने अपने दायरे में उन गैर-अनुसूचित प्राथमिक सहकारी बैंकों को भी शामिल किया है, जिनका जमा आकार ₹ 50 करोड़ और उससे अधिक है.

यह योजना आरबीआई लोकपाल तंत्र के क्षेत्राधिकार को तटस्थ बनाकर 'एक राष्ट्र एक लोकपाल' दृष्टिकोण अपनाती है.

- अब शिकायतकर्ता को यह पहचानने की आवश्यकता नहीं होगी कि उसे किस योजना के तहत लोकपाल के पास शिकायत दर्ज करनी चाहिए.
- शिकायतों को अब केवल योजना में सूचीबद्ध आधारों के अंतर्गत शामिल नहीं होने के कारण अस्वीकृत नहीं किया जाएगा.
- इस योजना में प्रत्येक लोकपाल कार्यालय के अधिकार क्षेत्र को समाप्त कर दिया है.
- किसी भी भाषा में भौतिक और ईमेल शिकायतों की प्राप्ति और प्रारंभिक प्रोसेसिंग के लिए भारतीय रिजर्व बैंक चंडीगढ़ में एक केंद्रीकृत और प्रोसेसिंग केंद्र स्थापित किया गया है.
- विनियमित संस्था का प्रतिनिधित्व करने और ग्राहकों द्वारा विनियमित संस्था के विरुद्ध शिकायतों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के महाप्रबंधक पद के प्रधान नोडल अधिकारी की होगी.
- विनियमित संस्था को उन मामलों में अपील करने का अधिकार नहीं होगा जहां लोकपाल द्वारा उसके विरुद्ध संतोषजनक और समय पर सूचना/दस्तावेज प्रस्तुत नहीं करने के लिए अवार्ड जारी किया गया हो.

इस योजना के तहत भारतीय रिजर्व बैंक के उपभोक्ता शिक्षा और संरक्षण विभाग के प्रभारी कार्यपालक निदेशक अपीलीय प्राधिकारी होंगे.

शिकायतें https://cms.rbi.org.in पर एवं ई-मेल द्वारा भी दर्ज की जा सकती है, भौतिक मोड में भी चंडीगढ़ भेजी जा सकती है.

इसके अतिरिक्त प्रारंभ में टोल फ्री नंबर 14448 (सुबह 9:30 से शाम 5:15 बजे) के साथ एक संपर्क केंद्र हिंदी, अंग्रेजी और आठ क्षेत्रीय भाषाओं में शुरू किया गया है. यह संपर्क केंद्र आरबीआई के वैकल्पिक शिकायत निवारण तंत्र के बारे में जानकारी प्रदान करेगा और शिकायत दर्ज करने में शिकायतकर्ताओं का मार्गदर्शन करें.

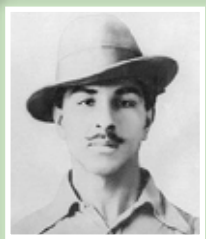

शहीद भगत सिंह

भगत सिंह एक भारतीय क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्हें 23 साल की उम्र में ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने फांसी पर लटका दिया था. उन्हें प्यार से 'शहीद भगत सिंह' के नाम से जाना जाता है, उन्हें औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक राष्ट्रीय नायक माना जाता है. एक किशोर के रूप में, भगत सिंह ने 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे को लोकप्रिय बनाया जो अंतत: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नारा बन गया.

दुश्मनों की गोलियों का हम सामना करेंगे, आज़ाद हैं, आज़ाद ही रहेंगे - चन्द्रशेखर आज़ाद

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कोरोना काल एवं ब्रेन फॉग

- दिनेश कुमार तिवारी
वरिष्ठ प्रबन्धक राजभाषा
क्षेत्रीय कार्यालय: ग्वालियर

सदी के बदलते ही समय नें जिस प्रकार से करवट ली है, घर के दूरदर्शन ने हाथ में सरण ले लिया है. इसने हमारे संस्कार को बुरी तरह से प्रभावित किया है. इसके नशे से सभी प्रभावित हो रहे है. लोग एक छत के नीचे रह रहे है, किंतु उन्हें एक दुसरे से बात करने की भी फुर्सत तक नहीं है. आज के तथाकथित इस स्मार्टफोन और सोशल मीडिया द्वारा संचालित मॉडर्न जीवनशैली को प्रभावित करने लगी है, साथ ही हमारे दिमाग पर भी इसका दुष्प्रभाव दिखने लगा है. कोरोना काल की महामारी ने इसे और खराब कर दिया. लोगों को जहां पूर्ण लॉकडॉउन का दंश झेलना पड़ रहा है. वहीं एक सस्ता और सुविधा जनक सोशल मीडिया का मनोरंजक माध्यम समाज के हरेक वर्ग के लोगों को आकर्षित कर रहा है. यह मनोरंजन का सिलसिला इतना व्यापक और विस्तार लिये हुए हैं कि हम में से कई लोग इसमें देर रात तक सर्फिंग करते हुए फसे रहते हैं. जिसका प्रभाव देर रात तक जगने के बाद भी सोने की अवस्था में भी अनवरत चलता रहता है.

ऐसा नहीं है कि स्मार्टफोन, मोबाइल, लैपटॉप, पीसी, टीवी ये सभी स्क्रीन है, जिनपर हम निरंतर कुछ न कुछ देखते - पढते - और सुनते रहते है. चैतन्य अथवा अर्धचेतन मन हमेशा इनपर किसी सूचना के लिये चैतन्य अथवा चौकन्ना रहता है. जब स्मार्ट फोन में बहुत देर तक कोई हलचल अथवा आवाज सुनाई नहीं देती है, तो मन मे कई प्रकार की विचार आने लगते हैं, कि कोई या कई नोटिफिकेशंस आने वाले थे, क्यो नहीं आया? कहीं फोन बंद तो नहीं, फोन म्यूट पर तो नहीं हो गया है आदि आदि. नित्य प्रतिदिन का यह हाल हो गया है कि किसी का संवाद आना रहता है और समय से नहीं आता तो हम बेचैन हो जाते हैं. हम सोचने लगते हैं कि नोटिफिकेशंस आने थे तो क्यो नहीं आये है. देखता हूं वो ऑनलाइन है कि नहीं. अगर ऑनलाइन है, तो मुझे संवाद क्यो नहीं दे रहा है? अत: वो बेईमान है. दूसरों को शुभरात्रि का संदेश दे रहा है और मुझे नजरअंदाज कर रहा है. अब मामला आगे बढने लगता है और हम देखने लगते है कि किस किस को उसने शुभरात्रि कहें हैं अथवा कमेंट भेजे है अथवा पसंद किया है. कुछ नहीं तो अपना मेल ही चेक कर लेते है. एक छत के नीचे सारा परिवार है, पर सभी स्मार्ट फोन में व्यस्त. इन दिनों सोशल नेटवर्किंग साइटों से जुड़े रहना सबको पसंद है. कुछ लोगो का मानना है कि यदि आप डिजिटल रुप में उपस्थित नहीं है, तो आपका कोई अस्तित्व नहीं हैं. सोशल नेटवर्किंग साइटों पर उपस्थित का बढ़ता दबाव और प्रभावशाली प्रोफ़ाइल, युवाओं को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रही है. आंकड़ों के मुताबिक एक सामान्य किशोर प्रति सप्ताह औसत रुप से 72 घंटे सोशल मीडिया का उपयोग करता है, ये चीजे अन्य कार्यो के लिए बहुत कम समय छोड़ते है, जिनके कारण उनके अदंर गंभीर समस्याएं पैदा होने लगती है, जैसे- अध्ययन, शारीरिक और अन्य फायदेमंद गतिविधियों में कमी, न्यूनतम ध्यान, चिंता और अन्य जटिल मुद्दों को उजागर करती है. अब हमारे पास वास्तविक मित्र की तुलना में अप्रत्यक्ष मित्र सबसे अधिक होते जा रहे हैं और हम दिन प्रतिदिन एक-दूसरे से संबंध खोते जा रहे हैं. इसके साथ ही अजनबियों, यौन अपराधियों को अपनी निजी जानकारीयो को दे बैठना आदि कई खतरे भी है. बड़े अपने छोटे- छोटे बच्चों के हाथ में

स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर

विनायक दामोदर सावरकर, जिनके नाम के पूर्व में सम्मानपूर्वक स्वातंत्र्यवीर शब्द का प्रयोग किया जाता है. वे एक भारतीय राजनीतिज्ञ, कार्यकर्ता और लेखक थे. वह हिंदू महासभा में एक प्रमुख व्यक्ति थे. उनका स्वतंत्रता के आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान था.

भी मोबाइल पकड़ा दे रहे है, जिससे छोटे बच्चे भी कार्टून के संसार में खो जाते हैं. एक प्रकार से वे भी इसके आदी होते जा रहे है.

नतीजतन, हम में से कई लोग मस्तिष्क धुंध (ब्रेन फॉग) से ग्रसित होते जा रहे हैं. फलस्वरूप हम स्पष्ट रूप से सोचने में असमर्थ हो रहे हैं. उदाहरण के लिये - कोई सामान हम लेने के लिये घर में प्रवेश करते हैं और भुल जाते हैं कि क्या लेना है अथवा पढाई या किसी महत्वपूर्ण कार्य पर अपने को एकाग्रचित नहीं कर पाते हैं. मन खिन्न रहने लगता है, विचारों की स्पष्टता कम होने लगती है. कभी कभी मस्तिष्क विचार शून्य होने लगता है, पढाई, लिखाई और अन्य सृजनात्मक कार्यों में मन नही लगता है. अर्थात वह कुछ भी सोचने समझने का काबिल नहीं रह जाता है. कुछ ममलो में व्यक्ति बोलता क्या है और करता क्या है, उसे खुद पता नहीं होता है. अंत में घबराने और विचलित रहने लगता है. इसके प्रारम्भिक लक्षण दिखते ही हमें सतर्क हो जाना चाहिए. हमें मस्तिष्क पर आये इस विशेष भार को शीघ्रता से कम करने के उपाय करने चाहिये. विशेष परिस्थिति में डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिये.

हाल ही की किताब बीटिंग ब्रेन फॉग की लेखिका डॉ सबीना ब्रेनन, न्यूरोसाइंटिस्ट ने हमारे मस्तिष्क के कक्ष को साफ़ करने के लिए कुछ सरल सुझाव दिये हैं. डॉ. ब्रेनन कहती है कि हमें अपनी नीद का कर्ज चुकाना ही पड़ता है. अत: इससे बचने के लिये हम जल्दी सोएं और पर्याप्त नींद लें. हालांकि उस पर टिके रहना कठिन है. डॉ, ब्रेनन के अनुसार भरपूर नींद दीमाग के उलझन अर्थात गड्ड-मड्ड को साफ करके तरोताजा करता है, जैसे महानगर में रात को सड़को की सफाई की जाती है, जब सड़क पर ट्रैफिक नहीं होता है. हमें जानना होगा कि मस्तिष्क को वास्तव में क्या चाहिये. हम अपने स्मार्ट फोन का उपयोग बात करने के लिये करे, अनावश्यक रूप से स्क्रीन को न खोले. हमें समय के साथ चलना भी है. सारी जानकारियां और सूचनाएं भी तो स्क्रीन पर है. इसलिये स्क्रीन इंटॉक्सिकेशन का भी समय निर्धारित करना होगा. हमें अपने सुविधानुसार ऑनलाइन उपलब्ध होने का समय निश्चित करना होगा और अपने चहने वालों को ऑनलाइन उपलब्ध होने का समय बताना होगा, ताकि उनको कोई ग़लतफ़हमी न हो.

अभी फिलहाल देखने में आया है कि कोरोना वायरस से निगेटिव घोषित हो जाने के बाद भी बहुत लोगों के शरीर में इस वायरस का बुरा असर मौजूद रहता है. इसे लम्बा कोविड (लॉंग कोविड) भी कहते है. इसके कई लक्षण भी होते हैं, इसमें से एक लक्षण को ब्रेन फॉग कहते हैं. जिसके फलस्वरूप कोरोना से बीमार हुए लोगों को स्पष्ट रूप से सोचने में दिक्कत होने लगती है. कुछ मिनटों का कार्य घंटो में नहीं हो पाता है. अपना प्रिय कार्य जैसे शॉपिंग आदि भी करने में दिक्कत आने लगती है.

डॉ. ब्रेनन कहती है कि मस्तिष्क कोहरे (ब्रेन फ़ॉग) को दूर करने के लिए, एक स्वस्थ्य दिनचर्या को पुन: प्रारम्भ करना होगा. मस्तिष्क सुचारू रूप से काम करने के लिए एक सुचारू पैटर्न पर निर्भर करता है. स्वस्थ्य दिनचर्या हमारे बॉडी क्लॉक को ठीक करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है.

महामारी से पहले डॉ. ब्रेनन ने कहा था कि हम अपने लगभग 40% व्यवहार से अभ्यस्त थे, और यह हमारे मस्तिष्क के प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए आवश्यक भी था. किंतु लॉकडॉउन ने हमें घर के अंदर बन्द कर दिया. जिससे हमारा आवागमन प्रभावित हुआ है. अत: इस महामारी में हमें उसने यह भी सलाह दी है कि हम दिन में एक दिखावटी आवागमन करें, जो पड़ोस में टहलना भी हो सकता है.

उसने यह भी कहा है कि मस्तिष्क हमारे द्वारा लिये गए पोषक तत्वों के लगभग 25 प्रतिशत खपत करता है, जिसे हम सेरेब्रल कॉर्टेक्स अर्थात मस्तिष्क सोच वाले हिस्से के रूप में जानते है. यह हिस्सा लिये गये पोषक तत्वों से उत्पन्न उर्जा का सबसे अधिक खपत करता है. इस ऊर्जा को कुशलता से संसाधित करने के लिए, मस्तिष्क लगातार आदर्श स्थिति की तलाश में रहता है. ऐसा इसलिए है कि वह बहुत कम संसाधनों का उपयोग करके अर्थात कम उर्जा की खपत से स्वचालित व्यवहार कर सके. अत: हमें अपने मस्तिष्क को शांत रखने के लिये अपने आप को इन सभी अधुनिक तकनीकी को छोड़कर विचार शून्य अर्थात ओटो पायलट मोड मे करके छोड देना चाहिये. कभी-कभी अपने आपको प्रिय वातावरण में ले जाकर भी अथवा संगीतमय वातावरण में रहकर मस्तिष्क के भावनात्मक हिस्से को रिचार्ज कर सकते है. वैसे ब्रेन फॉग को अभी तक पूर्ण रूप से समझा अथवा परिभाषित नहीं किया जा सका है. अभी इस विषय पर गहन अध्ययन की आवश्यकता है.

मंगल पांडे

मंगल पांडे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की 34 वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री रेजिमेंट में एक भारतीय सिपाही थे जो 1857 के भारतीय सिपाही विद्रोह के सूत्रधार थे. उन्होंने बन्दूक के कारतूस में गौ-मांस के होने का विरोध किया और अंगरेजी सत्ता के खिलाफ लड़ते-लड़ते शहीद हो गए.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय स्वतंत्रता के ७५ वर्ष

- किशोर कुमार दास
प्रबंधक (आईटी)
आरसीसी, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ को देश में आज़ादी के अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है. यूँ तो 15 अगस्त 1947 से आज तक आज़ादी के हर 25वें साल पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हैं, परन्तु इस वर्ष अनेक कारणों से भिन्न है. विगत कुछ वर्षों से देश के जड़वत पड़ी अनेकों मुद्दों को या तो बदल दिया गया है या फिर सुधार किया गया है. उदहारण के तौर पर जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को हटाकर विवादित विशेष राज्य का दर्जा समाप्त करना, अयोध्या के राम मंदिर के मसले का कानूनी ढंग से समाधान, मुस्लिम समुदाय के लिए अभिशप्त तीन तलाक के मुद्दे को समाप्त कर महिलाओ को सम्मान दिलाना, सम्पूर्ण देश में एक समान टैक्स व्यवस्था लागू करना, तेलंगाना, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख आदि राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशों का पुनर्गठन, विश्व में भारत का बढ़ता कद आदि शामिल हैं. इसके अतिरिक्त विश्वव्यापी कोरोना महामारी का मुकाबला एवं विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान, देशव्यापी स्वच्छता अभियान, आत्मनिर्भर भारत का संकल्प, एक भारत-श्रेष्ठ भारत का संकल्प इस उत्सव को कुछ खास बनाता है. इस प्रकार के अनेकों कारणों से स्वतंत्रता के इस 75 वें वर्षगाँठ को ''आजादी का अमृत महोत्सव'' के रूप में भारत सरकार द्वारा घोषित किया गया है. इस राष्ट्रीय महोत्सव को मनाने के लिए संपूर्ण देश में विशेष तैयारियां चल रही हैं. 75 सप्ताह तक चलने वाला यह जश्न 15 अगस्त 2023 को सम्पन्न होगा. इस जश्न को मनाते हुए समस्त भारतवासियों के मन में कुछ भावनाएं एवं कुछ सवाल सहसा हिलकोरें ले रही होंगी कि :

अमृत समान है उत्सव अपना, क्यों हैं नूतन क्यों है ख़ास ?
आज़ादी के 75वें वर्षगांठ पर, सहसा याद आया इतिहास.

आखिर प्रथम दृष्टया यह सवाल तो प्रत्येक भारतीय के मन में अवश्य ही उठने चाहिए कि आखिर किन-किन कारणों से हम गुलाम होते गये और हम खुद को सम्भालते हुए, सामाजिक पारंपरिक व्यवस्था को बचाते हुए, स्वयं और राष्ट्र को सुदृढ़ बनाते हुए अपनी आजादी को अजर-अमर कैसे बनायें?

भारत का प्राचीन इतिहास अत्यंत ही गौरवशाली रहा है. गूगल और इन्टरनेट के समय में हमारे इतिहास के उन पहलूओं को प्रस्तुत किया है जिसके बारे में हमें पाठ्यक्रम में नही पढाया गया है या फिर जिससे हम अनभिज्ञ रहे हैं. अमूमन सामान्य देशवासियों के स्मरण पटल पर इतिहास को मुग़ल शासन व्यस्था, अंग्रेजी हूकूमत और आजादी की लड़ाई तक ही उकेड़ा गया है.

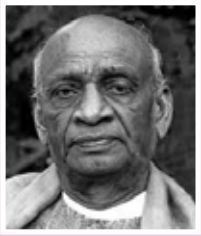

लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

सरदार पटेल ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान महत्वपूर्ण राजनैतिक लड़ाई लड़ी और जेल भी गए. आजाद हिन्दुस्तान को संगठित तथा मजबूत बनाने में इनकी प्रमुख भूमिका रही. इस कारण से इन्हें भारत का बिस्मार्क भी कहा जाता है. ये आजाद भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री थे. इन्हें भारत रत्न प्रदान किया गया.

आध्यात्मिक दृष्टि से परखा जाय तो त्रेता युग की राम-कथा हो या द्वापर युग की कृष्ण-कथा, यत्र-तत्र-सर्वत्र पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक ताना-बाना अत्यंत ही समृद्धशाली है एवं राष्ट्रीयता लोकतान्त्रिक भावना से ओतप्रोत है . बिडम्बना देखिये कि जिस भावना के साथ देश की अधिकांश जन मानस सोते-उठते नित्यप्रति जी रहे हैं उस इतिहास को हमारे पाठ्यक्रम में आजतक स्थान नहीं मिल पाया है.

कालांतर में भगवान बुद्ध और भगवान महावीर की धरती समस्त विश्व को ज्ञान से प्रकाशित करने का काम किया है. मौर्या साम्राज्य हो या फिर गुप्तकाल का स्वर्ण युग कौन भूल सकता है . धनसंपदा के मामले में भारत प्राचीनकाल में अत्यंत ही समृद्ध था. तभी तो इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था. सायरस द्वितीय, सिकंदर, महमूद ग़जनी, मोहम्मद गोरी जैसे विदेशी आक्रान्ताओं ने भारतीय संपदाओं को इस कदर लूटा की राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर होता गया और समाज में असुरक्षा की भावना व्याप्त होने लगी.

मध्ययुगीन भारत में विदेशी शासकों द्वारा स्थापित विभिन्न राजवंशों यथा गुलाम वंश, तुगलक वंश, लोदी वंश के शासनकाल में मूल भारतवासियों के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनितिक अधिकार को इस कदर क्षिन्न-भिन्न किया की लोगों की मानसिकता में राष्ट्रभावना की लोप होती गयी. रही-सही कसर मुग़ल साम्राज्य की स्थापना और उनके शासनकाल ने पूरा कर दिया. महाराणा प्रताप जैसे कुछ चुनिंदे राष्ट्र भक्तों की पराजय ने मुग़ल-साम्राज्य को मानो एकाधिकार दे दिया. मुग़लों ने भारतीय परंपरा, धार्मिक धरोहर जैसे पौराणिक विचारधारा को नेस्तनाबूत करने की ठान रखी थी और इसमें कुछ पथभ्रष्ट देशवासियों का साथ भी बखूब मिला था जिससे उनका मनोबल और भी सशक्त होता चला गया.

आधुनिक भारत का इतिहास जो कि 18वी शताब्दी के मध्य से मानी जाती औपनिवेशीकरण कर चूका था क्योंकि 31 दिसम्बर 1600 में स्थापित यह कंपनी यूँ तो आया था व्यापार के उद्देश्य से किन्तु बिखरी जनमानस और व्याप्त अशिक्षा एवं गरीबी को देखते हुए उन्होंने अपना उपनिवेश बाद के योजना को भारत में भी कायम करने को सोचा और 18 वी सदी के मध्य आते-आते संपूर्ण भारत को अपने कब्जे में कर लिया. इस प्रकार देश अपने आन्तरिक अंतर्कलह के कारण पुन:अंग्रेजों का गुलाम हो गया. तत्कालीन सामाजिक स्थिति और घटना क्रम को निम्नलिखित चंद पंक्तियों में व्यक्त किया जा सकता है :

बनियां बनकर गोरा आया, जयचंदों ने उसे बसाया
फूट डाल शासन करने में थे तेज़, कहते हैं उसको अंगेज़
बिखरा राष्ट्र, बिखरा समाज, बिखर गये सब भाई-भाई
खो गया पुरूषार्थ आवाम का 'राष्ट्रवाद' की सुध बिसराई
'राजवंशों' में युद्ध करवाकर, देश पर 'लोमड़ी-दृष्टि गड़ाकर
गर्भित लक्ष्य था, 'उपनिवेश', गुलाम बना गया भारत देश.

अब अंग्रेजों द्वारा भारत के प्राकृतिक धन-संपदाओं का दोहन एवं मानव संपदा का शोषण होने लगा. यह दौड़ लगभग दो सौ वर्षों तक चला किन्तु लगभग सौ वर्षों के पश्चात पराधीन जनता को अब समझ में आने लगा की दासत्व कितना कड़वा होता है. अब जनता का जमीर कुम्भकरणी नींद से जागने लगी और स्वाधीनता की आग धीरे-धीरे सुलगने लगी. जैसे-जैसे अंग्रेजी हुकूमत का अभिद्रोह बढ़ने लगा, स्वाधीनता आंदोलन की आग की आंच और ज्वाला उतनी ही तीव्र होने लगी. सन 1857 का 'सैनिक विद्रोह' हो या सन 1919 की 'जालियांवाला बाग़ का नर-संहार' और 'खिलाफत आंदोलन'. सन 1929 का 'दिल्ली विधानसभा बम विस्फोट की घटना' हो, 1922 की 'चौरी-चौरा कांड' या सन 1942 की 'भारत छोड़ो आंदोलन'. सभी आंदोलनों में हजारों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने जान की आहुति दी और बेखौफ़ होकर मौत को गले लगाया. अंतत: 15 अगस्त, 1947 को हमने देश के विभाजन का दंश झेलते हुए आज़ादी पाई.

पंडित जवाहरलाल नेहरू

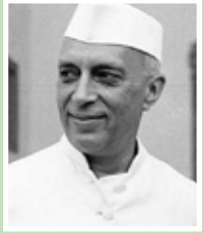

जवाहरलाल नेहरू एक भारतीय उपनिवेश-विरोधी राष्ट्रवादी, धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी, सामाजिक लोकतंत्रवादी और लेखक थे, जो 20वीं शताब्दी के मध्य में भारत में एक केंद्रीय व्यक्ति थे. 1930 और 1940 के दशक में नेहरू भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के प्रमुख नेता थे.

उफ़, कितना बिभत्स था आज़ादी पाने का वह सफ़र और परिदृश्य. आज़ादी के मुख्य नायकों में भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, खुदीराम बोस, सुखदेव, राजगुरू, रानी लक्ष्मी बाई, आदि के शहादत को कौन भूल सकता है? महात्मा गांधी की अगुवाई में प्राप्त स्वतंत्रता के पीछे अनेकों गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान है जिन्हें किताबों में दर्ज नहीं किया जा सका है जिनमें कुछ नामों यथा पीर अली खान, कन्हैया लाल मानिक लाल मुंशी, भिकाजी कामा, बेगम हज़रत महल, मातंगिनी हाजरा, पोटी श्रीरामूलू,तारा रानी श्रीवास्तव को अनदेखा नहीं किया जा सकता है. परंतु 15 अगस्त, 1947 की मध्य रात्रि में जब भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा स्वतंत्रता पाने की घोषणा की गयी तब संपूर्ण राष्ट्र हर्षोल्लास से झूम उठा. घर-घर दिए जलाये गये, आतिशबाजियां की गयीं, लोक एक दूसरे को स्वतंत्रता की बधाइयां देने लगे.

अत: हर्षोल्लास का यह 75वां अवसर है. स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर आज तक देश ने कई उतार चढाव देखे हैं. देश पर पडोसी मुल्क पाकिस्तान और चीन के द्वारा थोपे गये युद्धों का डटकर मुकाबला किया है और चीन से युद्ध को छोड़ सभी युद्धों में विजयश्री प्राप्त किया है. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तात्कालिक परिस्थिति को देखते हुए संविधान में कुछ धाराएं लागू की गयी थी जो समय के साथ बदले हुए परिदृश्य में नासूर बनकर उभरने लगी. देश में पुन: साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, वर्गवाद, जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद जैसी अनेक महत्वपूर्ण समस्यां सुरसा की भांति अपनी काया विस्तारित कर रही हैं. लोग स्वतंत्रता की कीमत भुलने लगे हैं. ऐसे में अगर हम ससमय सचेत न हुए तो यह हमारे लिए आत्मघाती और विनाशकारी हो सकता है.

वर्तमान परिस्थिति के मद्देनजर विशालकाय जनसंख्या, अशिक्षा, बेराजगारी, सामरिक असंतुलन आदि मोटी समस्याओं और कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन, सामरिक उत्पादन आयात-निर्यात की वर्तमान अवस्था के बीच हमने आत्मनिर्भर भारत का संकल्प लिया है. वर्तमान में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की 12 मई, 2020 को घोषणा की थी. वर्तमान में अनेकों सामग्रियों का आयात किया जा रहा है जिसपर एक मोटी विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ती है. धन के इस बहाव को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ही इस अभियान की शुरूआत की गयी है ताकि आयातीत वस्तुओं का निर्माण एवं उत्पादन देश में ही हो. उदाहरण के तौर पर सामरिक दृष्टि से लड़ाकू हेलीकाप्टर, मशीन गन, तोप, रडार प्रणाली, मिसाइल्स, पंडुब्बियां आदि का निर्माण एवं उत्पादन आज देश में ही किया जा रहा है जोकि पहले विदेश से ही आयात किया जाता था.

आज भी हमारे दैनिक जीवन की कई वस्तुओं का आयात चीन,अमेरिका, कोरिया, सऊदी अरब. अगर इन वस्तुओं का उत्पादन देश में ही होने लगे तो आत्मनिर्भरता के इस नीव पर विकसित देश की श्रेणी में सूचीबद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं होगा. क्योंकि तकनीकी और इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में देश पूर्व से ही विकसित रहा है. इसकी झलक 'डिजिटल इंडिया' के अंतर्गत डिजिटल कारोबार का बढ़ा स्वरूप में सहज ही मिल जाता है. अपने संकल्प के साथ हम डिजिटल लेन-देन के कारोबार को अत्यंत ही सुगमतापूर्वक मूर्तरूप देने में न कि कार्य कर हैं अपितु सफल भी हो रहे हैं. हमने वैश्विक महामारी कोरोना के टीका का सर्वप्रथम निर्माण कर पूरी दुनिया में यह संदेश दिया की विश्व की सबसे बड़ी टीकाकरण अभियान को सुचारू रूप से अल्पावधि में पूर्ण करने की क्षमता भारत में है. सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिवस 31 अक्टूबर,2015 के अवसर पर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' नामक प्रभावशाली योजना की शुरूआत भारत सरकार द्वारा की गयी है. इसका मुख्य उद्देश्य वर्तमान सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से भारत के अलग-अलग हिस्सों में रह रहे भारतीयों के बीच संबंध सुधारने एवं आपस में जोड़ना है. हमें बड़े ही संजीदगी से

लाला लाजपत राय

लाला लाजपत राय एक भारतीय लेखक, स्वतंत्रता सेनानी और राजनीतिज्ञ थे. उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. उन्हें पंजाब केसरी के नाम से जाना जाता था.

सरकार के इस योजना में भाग लेना चाहिए ताकि भारत की विविधता में एकता की भावना को अक्षुण्य बनाये रखा जा सके.

बुद्धि कौशल के बारे में अगर हम विचार करते हैं तो पाते हैं की भारत आज भी विश्व के कई देशों से आगे है . विकसित देशों की श्रेणी में अमेरिका जैसे अग्रणी देश भी यह स्वीकार करते हैं कि अमेरिका के प्रगति में, चाहे वह चिकित्सा क्षेत्र हो, या वैज्ञानिक या फिर तकनिकी क्षेत्र, सभी क्षेत्रों में भारत की प्रतिभा का बहुत बड़ा योगदान है . अब हमें यह तय करना है कि प्रतिभा का पलायन के पीछे क्या कारण है? कहीं यह आरक्षण का दुष्परिणाम तो नहीं ? अगर हाँ, तो इस बिंदु पर पुनर्विचार करना होगा.

आज वक्त है गुणन - मनन का ,
'राष्ट्र - भावना' पर चिंतन का
कैसे कल थे कैसा है आज,
कितना बदल गया देश कितना समाज?
कितना चढ़ा 'विकास' का सूरज,
कितना बढ़ा समाज में 'धीरज'?
क्या जाति-धर्म की खाई पाट चुके हम,
बेरोज़गारी का आकार हुआ कम?
क्या नारी का समाज में है सम्मान,
बच्चों के मुख पर है मुस्कान?
जनता सुखी हो और देश सबल,
वर्ना आज़ादी है निष्फल.

चलते-चलते मेरे विचार से, प्रथम दृष्टया यह सवाल तो प्रत्येक भारतीय के मन में अवश्य ही उठना चाहिए कि आखिर किन-किन कारणों से हम इतिहास के विभिन्न चरणों में गुलाम होते रहे हैं और किस प्रकार हम खुद को संभालते हुए, सामाजिक पारंपारिक व्यवस्था को बचते हुए, स्वयं और राष्ट्र को सुदृढ़ बनाते हुए अपने आजादी को अजर-अमन बनाएं रखें ?

हमारे समक्ष अगर ढेर सारी कठिनाइयां हैं तो अनेकों संभावनाएं भी है. आजादी के 75वें वर्ष जहां एक ओर प्रभु श्री राम का मंदिर बनते देख रहे हैं, वहीं दूसरी ओर आतंकवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, अलगाववाद को नियंत्रित होते देख रहे हैं. वहीं जनमानस में धर्म, भाषा, वर्ग और दलगत स्वार्थ से ऊपर उठने की भावना पैदा हो रही है. 'मेक इन इंडिया' का फल भी मिलने लगा है. अब हमें यह साबित करना है कि इन चुनौतियों को पार करते हुए हम अपना प्यारा देश भारत को किस प्रकार आत्मनिर्भर बनायें ताकि ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' एवं सबल भारत का सपना साकार हो सके.

अर्थात्

आएं आज़ादी के इस अमृत उत्सव पर,
अंतर्मन में यह विधान करें हम
आत्मनिर्भर का संकल्प लेकर,
एक भारत-श्रेष्ठ भारत का संधान करें हम.

आजादी के पचहत्तर साल का यह जश्न जिसे हम अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं और जो 12 मार्च 2021 से प्रारंभ होकर 15 अगस्त 2023 अर्थात् 78वें स्वतंत्रता दिवस तक चलने वाला है, हम सुनिश्चित करें कि इसके समापन होने तक हमारा राष्ट्र एक सबल एवं सक्षम राष्ट्र के रूप में संपूर्ण दुनिया के पटल पर उभरे और हम पुनः विश्व गुरू की अपनी पदवी को प्राप्त कर सकें. ढेर सारी बधाईयां सहित समस्त देशवासियों को भारतीय स्वतंत्रता के 75वें वर्ष की अनंत शुभकामनायें.

वन्दे मातरम्, जय हिन्द, जय भारत

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को प्यार से लोकमान्य कहा जाता है. वे एक भारतीय राष्ट्रवादी शिक्षक एवं स्वतंत्रता कार्यकर्ता थे. वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पहले नेता थे. अंग्रेजों ने उन्हें ''भारतीय अशांति का जनक'' कहा.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जरुरत

- अनुराग चतुर्वेदी
वरिष्ठ प्रबंधक
करेन्सी चेस्ट, चंडीगढ़

''सेवा निवृति को बस पन्द्रह'' दिन बचे है ...कैसे करेंगे आगे के सारे काम.. मंजु की शादी करनी है.. मनोज की आगे की पढ़ाई बाकी है.. जो फ़ँड मिलेगा तुम्हे .... उस से कितना काम हो पायेगा.. सोच कर चिन्ता हो रही है.. ''रानी ने सेवा राम की ओर देखा. .सेवा राम ने अपने हाथ माथे पर रख लिये ..और गहरी सोच मे डूब गया

''क्या सोच रहे हो. ..बताओ क्या करोगे.. वेतन से तो खर्चा पुरा नही होता था.. अब पेंशन से कैसे काम चलेगा.. ''रानी लगातार बोले जा रही थी..

''मनोज की पढ़ाई अभी बाकी है नही तो... वो ही कुछ नौकरी कर लेता ''रानी ने सेवा राम का मुह देखा..

सेवा राम कमरे से उठा और बाहर चला गया. बीडी सुलगाने के लिए जेब मे हाथ डाला तो जेब खाली थी.. सेवा राम पान की दुकान पर चल दिया..

सेवा राम ने चौरसिया पान वाले से एक बीडी का पैकेट और माचिस ली.. और बीडी सुलगाने ही वाला था कि चौरसिया बोल पडा... ''काहे परेसान लगत हो... सेवा.'' वो सेवाराम को सेवा ही बुलाता था... ''का हुई गवा. .अरे अब तो आराम के दिन आने वाले है.. आराम से भौजी के संग बैठ के बतियावे का समय आये वाला है. बहुत कर लियो काम अब चैन से घर रहो. ''चौरसिया के हाथ और जुबान दोनो एक साथ चलती है.. हाथ लगातार पान बनाते जा रहे थे और सेवाराम से बात भी चल रही थी.

''जिंदगी भर सभी के लिये करत रहे हो... अब आपन लिये सोच लिओ.. जोन पईसा मिले.. बिटिया के ब्याह के लिये रख लिओ थोडा पैसा... बाकी अपने खातिर बचाय लिओ.. कौनो काम ना आई.. सिर्फ़ पईसा काम आवत है. .तोहार खातिर.. भौजी खातिर चाही ना. ''चौरसिया ने कहते हुए एक पान का बीडा सेवा राम की ओर बढा दिया..

सेवा राम ने पान अपने मुह मे दबाया और पैसे चौरसिया की बढा दिये..

''ई... रोज रोज काहे पैसा देखावत हो सेवा.. जब जानत हो हम नाही लेत.. हमरे गाव के हो.. इतना स्नेह रखत हो ..भौजी हर त्योहार बार मिठाई नमकीन अपने हाथे से बनाय के भेजत है.. देवर समान मानत है का इतना काफ़ी नाही है.. ''चौरसिया ने कहा

''अरे.. चौरसिया.. हम अपनी आदत से मजबूर है.. हर बार लगता है कि बिना पैसा दिये चले जाते हैं.. तुम भी तो सामान

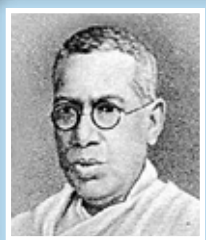

बिपिन चन्द्र पाल

बिपिन चंद्र पाल एक भारतीय राष्ट्रवादी, लेखक, वक्ता, समाज सुधारक और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के स्वतंत्रता सेनानी थे. पाल श्री अरबिंदो के साथ स्वदेशी आंदोलन के मुख्य वास्तुकारों में से एक थे.

लाते ही हो ना.. व्यापार मे इतना भी व्यवहार ठीक नहीं कि अपना नुकसान कर लो..''

इतनी देर से चौरसिया की बाते सुनते सुनते सेवाराम बोल पड़ा ..

''अरे... नुकसान भरपाई के लिए एक तुम ही बचे हो का..''

कहते हुए दोनो हँस पड़े.. सेवा राम वहाँ से घर की ओर चल पड़ा

सेवा राम के चेहरे पर फ़िर से परेशानी के भाव आने लगे थे.. सामने से राम बाबु जो उन के साथ काम करते थे के बेटे मनोहर को चमचमाती नई बाइक पर आते देख ठिठक कर खड़े हों गये..

''चाचा पायलागु.. कैसे है आप..'' मनोहर ने बाईक रोक कर सेवाराम के पैर छुये.. ''चाची.. मनोज.. मंजु.. सब ठीक है ना... अरे हा.. आप भी तो इसी महीने रिटायर होने वाले है ना.. मनोज की पढ़ाई पुरी हो गयी होती तो नौकरी मिल जाती.. आप पर बोझ ना पड़ता..वो तो पिता जी की सेवा निवृति से दो दिन पहले अगर एक्सीडेंट मे मृत्यु ना हुई होती तो मै भी आज बेरोजगार बैठा होता.. अच्छा चलता हूँ.. माँ इंतजार कर रही होगी.. कहते हुए मनोहर बाईक स्टार्ट कर चला गया..

सेवा राम के चेहरे पर अचानक चमक आ गई.. और वो कुछ सोचते हुए हाई वे की ओर बढ़ गया.. जो उस के घर से कुछ ही दूर था.. ...

सेवा राम के दरवाजे पर जोर जोर से आवाज आ रही थी..

''मनोज मनोज... जल्दी आओ.. सेवा राम का एक्सीडेंट हो गया है.. उन्हे सरकारी अस्पताल ले जा रहे हैं..''

रानी ने दौड़ कर दरवाजा खोला.. साथ ही मनोज और मंजु भी आ गये..

''अरे... क्या हुआ... पापा को.. कहा ले गये उन्हे.. कहते हुए.. रानी मनोज.. मंजु सब एक साथ भागे..

कुछ ही देर मे सेवा राम का शव लिये एम्बुलेंस आ गयी..

घर मे हा हा कार मच गया.. रानी.. मंजु ..मनोज सभी का रो रो कर बुरा हाल था ..

ऑफ़िस मे खबर दे दी गई थी.. ऑफ़िस से बडे साहब आ गये और दाह संस्कार के रुपये रानी के हाथ रख कर चले गये..

सब तैयारी हो गयी थी.. राम नाम सत्य है के साथ सेवा राम का शव चल गया..

कुछ ही दिनो मे ऑफ़िस से एक पत्र आया जिस मे सेवा राम के बकाया वेतन धनराशी.. पी एफ़.. ग्रेच्युइटी ..और इंश्युरंस का सब मिला कर बीस लाख का चेक था.. साथ ही मनोज का नियुक्ति पत्र भी...

सेवा राम जाते जाते भी वो कर गया ..जिस की घर पर सबसे ज्यादा जरुरत थी ..

सर अरविंद घोष

वे एक भारतीय राष्ट्रवादी होने के साथ साथ दार्शनिक, योग-गुरु, महर्षि तथा कवि भी थे. वे वन्दे मातरम् समाचार पत्र का सम्पादन भी करते थे. लाल-बाल-पाल के साथ मिलकर इन्होने आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. मार्ले मिंटो सुधार आन्दोलन इसका उल्लेखनीय अंश है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नवीनतम तकनीक एवं बैंकिंग

- सुदर्शना जे. सोनी
सहायक प्रबंधक
नवावाड़ज शाखा, अहमदाबाद

प्रस्तावना : भारतीय व्यवस्था में बैंकिंग व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था है, जिससे सभी भारतीय प्रभावित होते हैं. वे आम भारतीय हों या खास भारतीय हों, सभी भारतीय बैंकिंग व्यवस्था से रूबरू होते हैं. किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए बैंकिंग क्षेत्र एक धुरी के रूप में काम करता है. इसलिए बैंकिंग उद्योग अर्थ जगत की रीढ़ माना जाता है.

भारत में बैंकों का राष्ट्रीयकरण एक बड़ा बदलाव या और इंदिरा गांधी के काल में यह समय एक क्रांतिकारी समय माना जा सकता है. इसके पहले तो आम जनमानस सीधे तौर पर बैंकों से नहीं जुड़ा था और उन पर साहुकारी का मायाजाल चढ़ा हुआ था. इसके बाद क्रमवार ढंग से लोगों के जीवन में बदलाव आता गया, जो अब पूरी तरह टेकनोलॉजी के हवाले हो चुका है.

आज बैंकिंग का मतलब संपूर्ण रूप से बदल चुका है तथा अधिकांश लोगों के लिए यह केवल नकद लेन-देन से कई ज्यादा महत्वपूर्ण बन चुका है.

2015 में सरकार द्वारा जनधन योजना लाई गई,जिसमें तकरीबन 25 करोड़ नए खाते खोले गए. तमाम किन्तु परन्तु के बावजूद यह एक बड़ी क्रांति सरीखा था. क्योंकि इससे बहुत से वैसे लोग भी जुड़े थे जो अब तक बैंकिंग से बहुत दूर थे. यह सब मुमकिन हुआ तो केवल तकनीकी उपचारों से. आज यह आम जनता जो बैंकिंग से वाकिफ नहीं थी उन्हें अपनी जमा पूंजी को संभालना, उसका हिसाब रखना,जन कल्याण योजनाओं के लाभ उन तक पहुंचाना तथा उनका आर्थिक विकास करना यह सभी में आधुनिक बैंकिंग तथा नवीनतम तकनीकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है.

नोटबंदी के बाद : भारत की सवा सौ करोड़ आबादी को लाइनों में खड़ा करने वाले इस फैसले की कई तरह से व्याख्या दी जा सकती है. कोई इसे विनाशकारी तो कोई इसे काले धन पर लगाम लगाने वाली योजना बताता है, किसी ने इसे रोजगार छिननेवाला तो किसी ने देश की आर्थिक वृद्धि को घटाने वाला भी कहा. माना की जनता को इससे कई समस्याओं का सामना करना पड़ा किन्तु इस बात से हम इन्कार नहीं कर सकते की नोटबंदी के बाद बैंकिंग क्षेत्र में कई बदलाव देखने को मिले हैं. टेक्नोलॉजी ने एक जबरदस्त तरीके से दस्तक दी तथा कई नियम भी बदले गए हैं. तो आइए बात करते हैं इन बदलावों कि, इस क्षेत्र में आई नवीनतम तकनीकों की जिसके कारण बैंकिंग, बीमा तथा निवेश की दुनिया हुई आसान.

भीम एप : तकनीक की एक सरल परिभाषा है कि जिसके उपयोग से हमारा कार्य पहले से आसान तथा तुरंत हो सकें. 3एमबी से भी कम इस एप को हिन्दी, अंग्रेजी के अतिरिक्त भारत सरकार इसे ग्यारह भाषाओं में उपलब्ध करवा चुकी है जिससे इसकी पहुंच बेहद व्यापक हुई. सभी बड़े बैंक इस एप से जुड़े हैं और सुरक्षित यूपीआई यानी यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस से ट्रांजेक्शन की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं.

इस एप को चलाना बेहद आसान है जिसके कारण आप किसी अन्य व्यक्ति को शहर से दूर भी यदि पैसा भेजना या मांगना चाहे तो बहुत आसान है. यदि आप इस एप का बेहतरीन उपयोग कर पाएं तो आपको किसी भी दुकान पर नकद देने की जरूरत नहीं पड़ेगी और इस एप के जरिए आप भुगतान कर पाएंगे. इसका सबसे बड़ा फायदा यही है कि आपको अपने पास नकद रखने की जरूरत नहीं है. पैसा आपके खाते से निकल कर किसी व्यक्ति के खाते में सीधा जमा हो जाता है.

आसान के साथ यह एप एक सुरक्षित एप भी हैं क्योंकि इससे लेन-देन करने हेतु आपको अपना पासवर्ड लिखना पड़ता है. बिना पासवर्ड डाले आप पैसा भेज नहीं सकते. इसी तरह आपके बिना आपका धन इधर से उधर नहीं किया जा सकता.

अन्य मोबाइल वॉलेट्स : नोटबंदी के दौरान मोबाइल वॉलेट्स के उपयोग में एक असाधारण उछाल आया. इन वॉलेट्स ने जबरदस्त तरीके से सामान्य जनता को सहलियत दी अन्यथा नियंत्रण से बाहर जाने वाले हालात पर काबू पाना मुश्किल था. पेटीएम, एसबीआई बड़ी, मोबिक्विक, ऑक्सिजन, एमरूपी, फ्रीचार्ज जैसी तमाम कंपनियां और वालेट्स के कारण ही लोगों की कैश पर निर्भरता कम हुई.

इसके बाद पेटीएम और एयरटेल ने बाकायदा रिज़र्व बैंक से लायसेंस लेकर इस क्षेत्र में प्रवेश किया है. अब हमारा बैंकिंग का अनुभव और बेहतर हो सकता है.

पेटीएम का पेमेंट्स बैंक : डिजिटल पेमेंट्स कंपनी पेटीएम अपना पेमेंट्स

मदन मोहन मालवीय

मदन मोहन मालवीय एक भारतीय विद्वान, शिक्षा सुधारक और राजनीतिज्ञ थे, जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका के लिए उल्लेखनीय थे, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के चार बार अध्यक्ष और अखिल भारतीय हिंदू महासभा के संस्थापक थे.

बैंक लॉन्च कर चुकी है. अपने ग्राहकों को डिपॉजिट पर चार फीसदी ब्याज के साथ आकर्षक कैशबेक और इसके जैसी तमाम सहूलियतों के साथ यह व्यवस्था पारम्पारिक बैंकिंग को निश्चित ही चुनौती दे सकती है. इसका लक्ष्य भी कम महत्वाकांक्षी नहीं है, बल्कि 60 करोड़ ग्राहकों तक पहुंचने का दम भर रही है यह कंपनी. हाल में इनके पास 23 करोड़ से भी अधिक रजिस्टर्ड ग्राहक हैं.

नोटबंदी के समय पेटीएम ने आक्रमक रणनीति का उपयोग करते हुए तमाम अखबारों में पहले पृष्ठ पर माननीय प्रधानमंत्रीजी की तस्वीर लगाकर आक्रमक विज्ञापन प्रस्तुत किया था जो करोड़ों ग्राहकों तक पहुंचा भी.

हालांकि बाद में उसके ग्राहक और उपयोग में थोड़ी कमी नजर तो आई थी किन्तु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि चीन का बड़ा अलीबाबा ग्रुप और जापानी सॉफ्ट बैंक इसके बड़े निवेशकों में से हैं.

इसी से मिलता जुलता एयरटेल पेमेंट बैंक भी है और दूसरी कई संस्थाएं शुरूआत करने की प्रक्रिया में है.

इनटच बैंकिंग : इसके जरिए बैंकों का अधिकतर कार्य ऑटोमेटेड हो सकता है और यह मुमकिन है तकनीक से जुड़ी उन मशीनों की सहायता से, जिसे भारतीय स्टेट बैंक ने इन टच बैंकिंग का नाम दिया है. गौर करने वाली यह बात है कि भारतीय स्टेट बैंक की मानव रहित बैंक की 70 शाखाएं बखूबी कार्य कर रहीं हैं. निश्चित रूप से इससे बैंक में लगने वाली भीड़ कम हो सकती है.

बताया जा रहा है कि यह मशीन खाते खोलने, पासबुक प्रिंटींग, नकद जमा- भुगतान करने, एटीएम कार्ड मुहैया करने से लेकर लोन के लिए आवेदन करने तक के सभी काम चुटकियों में पूरा कर देगी. सबसे दिलचस्प बात तो यह है कि ऐसे में बैंक रविवार सहित अन्य छट्टियों में भी खुले रहेंगे. हालांकि तकनीक का सही उपयोग तथा अपडेशन भी बहुत ही आवश्यक है, अन्यथा इंटरनेट के युग में हैकर्स के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है.

डिजिटल अकाउंट : जब हम हर चीज ऑनलाइन कर सकते हैं तो अकाउंट बैंक में जाकर ही क्यों खुलवाएं ?

भारतीय स्टेट बैंक तथा अन्य निजी बैंक यह विकल्प दे रहे हैं. यानी हम अपने घर बैठे ही बैंक अकाउंट खुलवा सकते हैं. इस विकल्प में ग्राहक अपनी तस्वीर, पहचान पत्र तथा अन्य केवायसी दस्तावेज ऑनलाइन अपलोड़ कर अपना अकाउंट खोल सकता है. इतना ही नहीं वह ऑनलाइन निवेश, बीमा, पैसे का अंतरण सभी कुछ अपने घर बैठे कर सकता है.

डिजिटल अकाउंट पर आपको डिजिटल डेबिट कार्ड भी दिया जाता है जिसका इस्तेमाल ऑनलाइन पेमेंट के लिए कर सकते हैं. चेक बुक जैसी अन्य वस्तुओं के लिए आवेदन का विकल्प दिया जाता है.

इन तकनीकों तथा उपकरणों का महत्व हाल में चल रही महामारी में और बढ़ गया है. कोविड -19 जैसी इस महामारी में जनता का घर से बाहर निकलना मुश्किल है तो इस भयावह माहौल में इन ऑनलाइन विकल्पों का उपयोग किसी बड़े जीवन दान से कम नहीं है. जहां इन्सान रोजगार तथा पैसों की कमी होने के कारण बेबस है, वहां सरकारी बीमा का क्लेम यह सभी उसके बचत खाते में उस तक पहुंचाया जा सकता है. इसलिए यह ऑनलाइन तथा डिजिटल खाता खोलने की सुविधा बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है.

बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी : अब ग्राहकों का बिना अपना अकाउंट नंबर बदले एक बैंक से दूसरे बैंक में खाता ट्रांसफर करने की सुविधा मिल सकती है. ठीक मोबाइल नंबर पोर्टेबिलिटी की तरह, वैसे काफी समय से बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी की बात चल रही है. यदि ऐसा होगा तो ग्राहकों को कई बैंक अकाउंट खोलने से निजात मिल सकती है. हालांकि, यह प्रक्रिया अभी शुरूआती चरण में है, किन्तु अब जबकि तमाम प्राइवेट बैंक मार्केट में आ रहे हैं तो यह सुविधा महत्वपूर्ण हो सकती है, इस बात में दो राय नहीं.

ऑनलाइन लोन-आसान लोन प्रक्रिया : आजकल जिस तरह निवेश, बीमा, बैंकिंग सुविधाएं ऑनलाइन उपलब्ध है वहां लोन भी ऑनलाइन प्राप्त किए जा सकते हैं. कई प्राइवेट बैंक ग्राहकों को उनके खाते के लेन-देन के अनुसार टेलिफोन पर लोन देने की सुविधा प्रदान करते हैं.

केवल प्राइवेट बैंक ही नहीं किन्तु पेटीएम, फोन-पे जैसी एप में भी इन्स्टन्ट लोन का विकल्प दिया जा रहा है. हालांकि यह लोन पर ब्याज दर अधिक लगाया जाता है, इसलिए ग्राहक ऐसे लोन लेने से पहले विचार अवश्य करेंगे.

2018 के नवम्बर महिने में हमारे प्रधानमंत्रीद्वारा एक लोन पोर्टल लाँच किया गया था. यह लोन मध्यम, छोटे तथा अति छोटे (एसएसएमई) एंटरप्राइज के लिए था, जो लोग अपने मौजूदा व्यवसाय का विस्तार करना चाहते है. इस योजना की खास बात यह थी कि इस योजना के तहत मध्यम, छोटे तथा अति छोटे एंटरप्राइज केवल 59 मिनट में एक लाख से लेकर पांच करोड़ तक का लोन प्राप्त कर सकते हैं. यह पोर्टल पीएसबी 59 के नाम से जाना गया. इस योजना में सार्वजनिक और प्राइवेट बैंक साथ ही गैर-बैंकिंग फाइनेंनशियल संस्थाएं भी शामिल हुई. जरूरी दस्तावेज ऑनलाइन पोर्टल पर डालने से लोन की योग्यता बतायी जाती थी. यह सुविधा एक एडवांस टेक्नोलॉजी का बड़ा उदाहरण है.

हाल में चल रही कोरोना वायरस महामारी के कारण निम्न वर्ग को

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भीमराव रामजी अम्बेडकर एक भारतीय विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री और सामाजिक उत्थान के प्रति कृत संकल्प थे, जिन्होंने उस समिति का नेतृत्व किया जिसने संविधान सभा की बहसों में प्राप्त आम सहमति को सारांशित करके भारत के संविधान का मसौदा तैयार किया.

कोई साथ ना भी हो तब भी अच्छे उद्देश्य के लिए अकेले चल देना चाहिए.

रोजगार में बेहद मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है. इसलिए इस वर्ग के लिए सरकार द्वारा पीएम स्वनिधि योजना शुरू की गई है. इसकी प्रक्रिया भी बहुत सरल है. ऑनलाइन अर्जी करने पर आपकी बैंक तथा शाखा रु.10,000/- तक का ऋण ग्राहक को दे सकता है. इस महामारी में इतनी सरल लोन सुविधा छोटे व्यापारी वर्ग के लिए महत्वपूर्ण योगदान देती है.

यह सभी ऑनलाइन पोर्टल आवेदकों की ओर से दी गई जानकारी की सुरक्षा का समझते हैं. इसलिए हाई लेवल की सुरक्षा के साथ आवेदकों की महत्वपूर्ण वित्तीय जानकारी पूर्ण रूप से सुरक्षित रहती हैं.

कोरोना महामारी तथा बैंकिंग तकनीक - भारतीय रिज़र्व बैंक ने ग्राहकों से डिजिटल सेवाओं का इस्तेमाल करने का कहा.

भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर श्री शक्तिकांत दास ने ग्राहकों से जितना मुमकिन हो उतना डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं को इस्तेमाल करने की सलाह दी है. कोरोना संक्रमण को रोकने हेतु यह सलाह दी गई. उन्होंने यह भी कहा कि कोविड 19 को देखते हुए सरकार और आरबीआई डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा दे रहे हैं. उनके मुताबिक लोगों को नकद लेन-देन की जगह डिजिटल पेमेंट का सहारा लेना चाहिए. इसके लिए कई तरह के पेमेंट चॅनल उपलब्ध हैं. जिसमें एनईएफटी तथा आईएमपीएस शामिल हैं. पिछले एक साल में केन्द्रिय बैंक ने डिजिटल लेनदेन को आसान और सुविधाजनक बनाने के लिए कई कदम उठाएं हैं.

एनईएफटी पेमेंट मुफ्त और 24/7 उपलब्ध : 2019 में रिज़र्व बैंक द्वारा एनईएफटी और आरटीजीएस के जरिए भुगतान पर शुल्क हटाने का एलान किया था. साथ ही बैंकों को भी निर्देश दिया था कि वे इसका फायदा ग्राहकों को पहुंचाएं. इस निर्देशानुसार शुल्क घटाए गए तथा यह सुविधाएं 24/7 उपलब्ध करवाई गई.

डिजिटल पेमेंट रेग्युलेटर : फरवरी में मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक में रिज़र्व बैंक ने 2020 तक सेल्फ रेगुलेटरी ऑर्गनाइजेशन (एसआरओ) गठित करने का एलान किया था. इसका मकसद सुरक्षा को बढ़ाना ग्राहकों की सुरक्षा और डिजिटल पेमेंट सिस्टम में प्राइसिंग पर नियंत्रण रखना है.

भारत बिल पेमेंट सिस्टम : सितंबर 2020 में रिज़र्व बैंक ने भारत बिल पेमेंट सिस्टम (बीबीपीएस) का दायरा बढ़ा दिया. इसमें सभी बार-बार भुगतान किए जाने वाले बिलों को शामिल किया गया. इनमें स्कूल की फीस, बिमा प्रिमियम तथा म्युनिसिपल कर शामिल हैं.

यूपीआई तथा आईएमपीएस : यूपीआई तथा आईएमपीएस की मदद से धनराशि बहुत ही कम समय में ट्रांसफर की जा सकती है. इसमें एनईएफटी से भी कम समय लगता है. यह एक मोबाइल प्लेटफार्म आधारित सुविधा है.

तो इस प्रकार नवीनतम तकनीकों की सहायता से बैंकिंग बहुत ही सरल हो गई है. कम समय में सारे काम करवाने वाला यह इन्टरनेट आधारित बैंकिंग सच में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है.

सजगता : दिनों दिन टेक्नोलॉजी का प्रसार बढ़ता जा रहा है. बैंकिंग क्षेत्र तो पूर्णरूप से इस पर ही निर्भर बन चुका है. ऐसे में आवश्यकता सावधानी की भी है, क्योंकि जिस तेजी से टेक्नोलॉजी बढ़ रही है. उसी तेजी से बढ़ रहे हैं अपराध भी. तो आइए देखते हैं, इस मानक पर हमें किन महत्वपूर्ण बातों का हमेशा ध्यान रखना चाहिए.

- मोबाइल बैंकिंग में आवश्यक तथा ऑफिशियल एप ही इस्तेमाल करें और बैंकिंग के लिए पब्लिक वाई-फाई का इस्तेमाल कतई न करें.
- बैंकिंग से जुड़ी जानकारी जैसे यूजर नेम, पासवर्ड इत्यादि मोबाइल में कदापि ओटोसेव न रखें. अपने फोन को पासवर्ड और बेहतरीन मोबाइल सिक्युरिटी एप्स से जोड़ें.
- फिशिंग अटैक, आइडेंटिटी थेफ़्ट, की-लॉगर्स इत्यादि अपराधिक गतिविधियों के प्रति सजग रहें. बैंकिंग के लिए कभी भी लॉग-इन लिंक का इस्तेमाल न करें.
- अपने बैंक अकाउंट के अंतिम लॉगिन डिटेल चेक करते रहें.
- अपने अकाउंट के बैलेंस पर बारीक नजर रखें, तात्पर्य पासबुक नियमित अपडेट करवाते रहें, ताकि किसी संदिग्ध गतिविधि को आप तुरंत पकड़ सकें.
- वैसे तो पब्लिक कम्प्यूटर पर बैंकिंग करनी ही नहीं चाहिए किन्तु बेहद जरूरी होने पर प्राइवेटब्राउजिंग / इन्कॉग्नीटो विंडो में लॉगिन करें.
- ऑनलाइन शॉपिंग में क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल ठीक रहता है क्योंकि फ्रॉड होने पर आप बैंक को सीधा रिपोर्ट कर सकते हैं. जबकि डेबिट कार्ड में रियल मनी तुरंत कट जाती है.

इसके अतिरिक्त विभिन्न एंटी-वायरस सेफ बैंकिंग के लिए आपको वर्चुअल विंडो प्रोवाइड करते हैं. यदि आपके पास कई बैंकों के ऑनलाइन पासवर्ड्स हैं तो उन सभी के पासवर्ड अलग रखने की कोशिश करें.

निश्चित रूप से बैंकिंग आज के युग में इंसान के जीवन का सार्वधिक महत्वपूर्ण अध्याय बन चुका है और इसलिए भी इसके बारे में हर एक को जानना समझना उतना ही आवश्यक है, जितना खाना खाना या पानी पीना.

आप सजग रहें और बैंकिंग के दिन प्रतिदिन बदलते नियमों से तालमेल बिठाएं, तो आपका अर्थतंत्र अवश्य ही दुरूस्त रहेगा.

बाबू वीर कुअंर सिंह

कुंवर सिंह (13 नवंबर 1777 - 26 अप्रैल 1858) सन 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही और महानायक थे. कुंवर सिंह को बाबू कुंवर सिंह के नाम से भी जाना जाता है. अन्याय विरोधी व स्वतंत्रता प्रेमी बाबू कुंवर सिंह कुशल सेना नायक थे. इनको 80 वर्ष की उम्र में भी लड़ने तथा विजय हासिल करने के लिए जाना जाता है. वे राजपूत समाज से थे. वो राजपूतों की उज्जैन शाखा से थे.

रंग बिरंगी मैं तितली सी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रंग बिरंगी मैं तितली सी
लंबी ऊंची उड़ान भरू
अपने नाजुक पंखों से
हर सपने को साकार करू

फूल-फूल पर डोल-डोल के
तबियत से अभिमान करू
रंग बिरंगी मैं तितली सी
लंबी ऊंची उड़ान भरू

अपने दुख-दर्द भूल-भालकर
मैं फिर से परवान चढ़ूं
तू डाल-डाल मैं पात-पात
बेड़ा अपरम पार करू
रंग बिरंगी मैं तितली सी
लंबी ऊंची उड़ान भरू

मैं ममता की मूरत बन कर
निर्मल, पावन स्वच्छ चलू
जो आ जाए भस्मासुर तो
मैं काली का रूप धरू
रंग बिरंगी मैं तितली सी
लंबी ऊंची उड़ान भरू

मेरा मौसम मेरा आंगन
मेरी ही बरसाते हैं
कण-कण पर अपना हक जताती
अपना ही महिमा गान करू
रंग बिरंगी मैं तितली सी
लंबी ऊंची उड़ान भरू

आओ तुम्हें हिन्दुस्तान दिखाऊ
राजाओं निजामों में
अखण्ड है मेरी मूरत
मैं किस्से पैगामों में

तीन रंग का मेरा माथा
नहीं मिलती मैं खैरातो में
सर पर रखकर प्रतिष्ठान करू
तू अनमोल फिजाओं में
रंग बिरंगी मैं तितली सी
लंबी ऊंची उड़ान भरू
अपने नाजुक पंखों से
हर सपने को साकार करू

- राहुल जैन
सहायक प्रबन्धक,
आंचलिक कार्यालय, भोपाल

कस्तूरबा गांधी

कस्तूरबा गांधी एक भारतीय राजनीतिक कार्यकर्ता थीं. उन्होंने 1883 में मोहनदास गांधी से शादी की. अपने पति और बेटे के साथ, वह ब्रिटिश भारत में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल थीं. वह काफी हद तक अपने पति से प्रभावित थी. उनके जन्म दिन की याद में राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस हर साल 11 अप्रैल को मनाया जाता है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज कल की जनरेशन

इस युग के इस नए पीढ़ी का मत करो रे अपमान
आज कल की जनरेशन कह कर मत करो हमे बदनाम.

ज्यादा न सोचिए सरकार छोटी सी है तकरार
यह बात मानना छोड़ दे की हम में नहीं है संस्कार.

सारा दिन मोबाइल के पीछे थोड़ी दुनिया भी देखो
शर्मा जी के बेटे से थोड़ा कुछ तो सीखो.

यही शिकायत होती है सबको इस मजबूरी से हमारी
पर कैसे समझाए आपको इसी में दुनिया हमारी सारी.

थोड़ी सेहत बनाया करो थोड़ा व्यायाम किया करो
स्वस्थ रहने के लिए जंक फूड से दूर रहा करो.

गलत फहमिया मानो जंगल की आग को तरह फैली है
सब्जी दाल फल खाने की जनाब आदत हमने भी डाली है.

घातक प्रदूषण धरती का तपना तुमने ही तो शुरू किया
ठंडक थी बचपन में हमारे तुम्ही ने उसे बिगाड़ दिया.

गौर फरमाना यह पर थोड़ा मामला जरा संगीन है
इस दुनिया में पेड़ लगा कर हमने बनाया इसे रंगीन है.

रही बात प्रदूषण की तो वह एक दिन का खेल नहीं
जितना निसर्ग हमने संवारा उसका कोई मेल नहीं.

अपने ही सपनो में खोकर अज्ञानी बन मत भटकों
अपने आस पास को घटनाओं पर भी जरा नजर रखो.

आज की दुनिया से अनजान है हम यही है आपकी कहानी
शर्त लगाकर देखिए मिया, सबसे पहले ताजा खबर हमने ही है सुनानी.

माना की आपका जमाना कठिनाइयों का मेला है
पर ये बात तो मानिए की संकट हमने भी झेला है.

हमारा समय दिखने में भले ही सरल दिखाई पड़ता है
पर हर इंसान को अगले की थाली में घी ज्यादा ही दिखता है.

बस यही बात है मनवानी आपसे हम भी है इंसान
किसी भी जमाने में जीना नहीं इतना आसान.

इतनी ही विनंती आपसे हम पर करे थोड़ा विश्वास
विन है लूटा देंगे इस देश के लिए अपना हर एक श्वास.

- अथर्व शालीग्राम
पुत्र श्री डी.एस. शालीग्राम, समप्र
अनुपालन विभाग, केन्द्रीय कार्यालय

महाराणा प्रताप सिंह (9 मई 1540 - 19 जनवरी 1597)

महाराणा प्रताप सिंह उदयपुर, मेवाड में सिसोदिया राजपूत राजवंश के राजा थे. उनका नाम इतिहास में वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम और दृढ प्रण के लिये अमर है. उन्होंने मुगल बादशहा अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और कई सालों तक संघर्ष किया. महाराणा प्रताप ने मुगलों को कई बार युद्ध में भी हराया और हिंदुस्थान के पुरे मुगल साम्राज्य को घुटनो पर ला दिया.

हिन्दी दिवस - केन्द्रीय कार्यालय

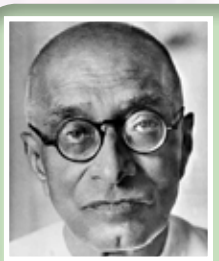

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भारत के वकील, लेखक, राजनीतिज्ञ और दार्शनिक थे. वे राजाजी नाम से भी जाने जाते हैं. वे स्वतन्त्र भारत के द्वितीय गवर्नर जनरल और प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल थे. वे मद्रास प्रान्त के मुख्यमंत्री भी रहे. वे गांधीजी के समधी थे.

ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिसमें सब प्राणियों के प्रति स्नेह भरा हो तथा जो सुनते समय सुखद जान पडे - वेदव्यास

स्वतंत्रता दिवस - 15 अगस्त 2021

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, चण्डीगढ़

आंचलिक कार्यालय, चेन्नै

आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

आंचलिक कार्यालय, मुंबई

आंचलिक कार्यालय, कोलकाता

वीणा दास (1911-1986)

वीणा दास बंगाल की भारतीय क्रान्तिकारी और राष्ट्रवादी महिला थीं. 6 फरवरी 1932 को उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय के एक दीक्षान्त समारोह में अंग्रेज़ क्रिकेट कप्तान और बंगाली गर्वनर स्टनली जैक्शन की हत्या का प्रयास किया था.

संस्थापक जयंती - 9 अगस्त 2021

आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

आंचलिक कार्यालय, कोलकाता

आंचलिक कार्यालय, चेन्नै

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

सरोजिनी नायडू

सरोजिनी नायडू एक भारतीय राजनीतिक कार्यकर्ता और कवियत्री थीं. नागरिक अधिकारों, महिलाओं की मुक्ति और साम्राज्यवाद विरोधी विचारों की समर्थक, वह औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थीं.

समय पर वही सवारी कर सकता है जो समय की लगाम पकडे रहे - अमृता प्रीतम

हिन्दी दिवस - आंचलिक कार्यालय

आंचलिक कार्यालय, दिल्ली

आंचलिक कार्यालय, पटना

आंचलिक कार्यालय,भोपाल

आंचलिक कार्यालय, कोलकाता

आंचलिक कार्यालय, मुंबई.

आंचलिक कार्यालय, चेन्नै.

मदनलाल धींगरा (1883 -1909)

भारतीय स्वतंत्रता की चिनगारी को अग्नि में बदलने का श्रेय महान शहीद मदन लाल धींगरा को ही जाता है . वे इंग्लैण्ड में अध्ययन कर रहे थे जहाँ उन्होने विलियम हट कर्जन वायली नामक एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी. कर्जन वायली की हत्या के आरोप में उन पर 23 जुलाई, 1909 का अभियोग चलाया गया . मदन लाल ढींगरा ने अदालत में खुले शब्दों में कहा कि ''मुझे गर्व है कि मैं अपना जीवन समर्पित कर रहा हूं.'' यह घटना बीसवीं शताब्दी में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की कुछेक प्रथम घटनाओं में से एक है.

हिन्दी दिवस - क्षेत्रीय कार्यालय

क्षेत्रीय कार्यालय दरभंगा.

क्षेत्रीय कार्यालय रोहतक.

क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा.

क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून.

क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्गापुर

जीवटराम भगवानदास कृपलानी

जीवटराम भगवानदास कृपलानी भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, गांधीवादी समाजवादी, पर्यावरणवादी तथा राजनेता थे. उन्हें सम्मान से आचार्य कृपलानी कहा जाता था.

यदि तुम में सहनशक्ति है तो तुम में किसी बात की कमी नहीं - नारायण दास

राजभाषा समाचार

क्षेत्रीय कार्यालय आगरा में दिनांक 27.08.2021 को माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही जी कि अध्यक्षता में व्यावसायिक बैठक के दौरान राजभाषा विभाग द्वारा तैयार हिंदी पोस्टर का विमोचन करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक, श्री एस.के. गुप्ता फील्ड महाप्रबंधक लखनऊ, श्री एल. सी. मीणा क्षेत्रीय प्रबंधक आगरा व राजभाषा अधिकारी सोमलता.

अमृतसर क्षेत्र की समीक्षा बैठक में माननीय श्री राजीव पुरी जी, कार्यपालक निदेशक महोदय, श्री वी वी नटराजन, फील्ड महाप्रबंधक तथा श्री रजनीश शर्मा, क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा राजभाषा पुस्तिका का विमोचन.

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित पश्चिम एवं मध्य क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में हमारे मुंबई अंचल की गृहपत्रिका यशस्करम का विमोचन किया गया.

बागपत नराकास की अर्ध- वार्षिक बैठक में हमारी बागपत शाखा को तृतीय शील्ड एव प्रमाणपत्र द्वारा सम्मानित किया गया. सुश्री मनीषा मिश्रा शाखा प्रबंधक श्री देवराज, नराकास अध्यक्ष से शील्ड एवं प्रमाणपत्र ग्रहण करते हुए. नराकास सदस्य बैंक के कार्यालय प्रमुख साथ में हैं.

बैंक नराकास अहमदाबाद के तत्वावधान में आयोजित सदस्य बैंकों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में हमारे बैंक के श्री विजय नामदेव एवं श्री संजय श्रीवास्तव को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

दि. 22.09.2021 को सहायक निदेशक कार्यान्वयन एवं कार्यालयाध्यक्ष श्री नरेन्द्र मेहरा, गृहमंत्रालय राजभाषा विभाग, गाजियाबाद द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर के औनलाइन निरीक्षण के दौरान आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी में उपस्थित श्री एल. भी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री जी.एन.शुक्ला, मुख्य प्रबंधक, शुभ लक्ष्मी शर्मा राजभाषा अधिकारी एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी गण

शिवराम हरि राजगुरु

शिवराम हरि राजगुरु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे. इन्हें भगत सिंह और सुखदेव के साथ 23 मार्च 1931 को फाँसी पर लटका दिया गया था. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में राजगुरु की शहादत एक महत्वपूर्ण घटना थी.

राजभाषा समाचार

बैंक नराकास, कोलकाता द्वारा सदस्य बैंकों के राजभाषा अधिकारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिता में श्री राजीव साव ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया. यह पुरस्कार उन्हें हमारे फील्ड महाप्रबंधक महोदय के कर कमलों से प्रदान किया गया.

दिनांक 25.08.2021 को कोयंबटूर बैंक नराकास में हमारे बैंक को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार प्राप्त करते हुए वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री पी वी उन्नीकृष्णन जी..

दि. 24/08/2021 को आंचलिक कार्यालय, लखनऊ में राजभाषा के प्रचार प्रसार हेतु राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई. श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया एवं राजभाषा प्रदर्शनी की सराहना की गई.

बटुकेश्वर दत्त (18 नवंबर 1910 - 20 जुलाई 1965)

बटुकेश्वर दत्त भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रान्तिकारी थे. बटुकेश्वर दत्त को देश ने सबसे पहले 8 अप्रैल 1929 को जाना, जब वे भगत सिंह के साथ केन्द्रीय विधान सभा में बम विस्फोट के बाद गिरफ्तार किए गए. उन्होनें आगरा में स्वतंत्रता आन्दोलन को संगठित करने में उल्लेखनीय कार्य किया था.

राजभाषा समाचार

दिनांक 22 सितम्बर, 2021को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा बडौदा क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया. इस दौरान क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा लगायी गयी राजभाषा प्रदर्शनी का माननीय सांसदों द्वारा अवलोकन किया गया.

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा 02 अक्टूबर 2021 को उप महाप्रबंधक श्री के. धारासिंग नायक आंचलिक कार्यालय भोपाल को हिन्दीतर भाषी हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मनित किया गया. चित्र में शील्ड प्रदान कर सम्मान करते हुए मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल एवं अन्य अतिथिगण.

दिनांक 22.09.2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की अर्द्ध वार्षिक बैठक में आंचलिक कार्यालय, कोलकाता को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2020-21 का तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. चित्र में नराकास अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, यूको बैंक श्री ए.के. गोयल से पुरस्कार स्वरूप शील्ड प्राप्त करते हुए श्री डी. एन. राजेन्द्र कुमार, फील्ड महाप्रबंधक, कोलकाता अंचल.

सुखदेव (15 मई 1907 से 23 मार्च 1931)

इनका पूरा नाम सुखदेव थापर था. सुखदेव थापर ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला लिया था. इन्होने भगत सिंह को मार्ग दिखाया था. इन्होने ही लाला लाजपत राय जी से मिलकर चंद्रशेखर आजाद जी को मिलने कि इच्छा जाहिर कि थी. उन्हें भगत सिंह और राजगुरु के साथ 23 मार्च 1931 को फाँसी पर लटका दिया गया था. सुखदेव भगत सिंह की तरह बचपन से ही आज़ादी का सपना पाले हुए थे.

सकर्तता जागरूकता सप्ताह

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, दिल्ली

आंचलिक कार्यालय, कोलकाता

आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

आंचलिक कार्यालय, मुंबई

आंचलिक कार्यालय, पटना

आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

राम प्रसाद 'बिस्मिल' (11 जून 1897 - 19 दिसम्बर 1927)

राम प्रसाद 'बिस्मिल' भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रान्तिकारी धारा के एक प्रमुख सेनानी थे, जिन्हें 30 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सरकार ने फाँसी दे दी. वे मैनपुरी षडयन्त्र व काकोरी-काण्ड जैसी कई घटनाओं में शामिल थे तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के सदस्य भी थे. राम प्रसाद एक कवि, शायर, अनुवादक,बहुभाषाभाषी, इतिहासकार व साहित्यकार भी थे.

सत्य को सूचक ही नहीं, प्रेरक भी होना चाहिए - रविन्द्रनाथ टैगोर

बैंक का स्थापना दिवस - 21.12.2021

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, चण्डीगढ़

आंचलिक कार्यालय, दिल्ली

आंचलिक कार्यालय, कोलकाता

आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

आंचलिक कार्यालय, मुंबई

आंचलिक कार्यालय, चेन्नै

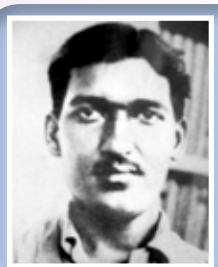

अशफ़ाकुल्लाह ख़ाँ

अपने आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए, हथियार खरिदने और अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक गोलाबारूद इकट्ठा करने के लिए, हिन्दुस्तानी सोशिलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सभी क्रान्तिकारियों रेलगाडी में जा रहे सरकारी खजाने को लूटने का कार्यक्रम बनाया. 9 अगस्त 1925 को खान और बिस्मिल सहित उनके क्रान्तिकारी साथियों ने मिलकर लखनऊ के निकट काकोरी में रेलगाड़ी में जा रहा ब्रिटन सरकार का खजाना लूट लिया.

आउटरीच कार्यक्रम

बक्शी का तालाब में आयोजित क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम में श्री एम वी राव प्रबंध निदेशक एवं सी ई ओ, श्री एस के गुप्ता फील्ड महाप्रबंधक लखनऊ, श्री ए के खन्ना वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक लखनऊ क्षेत्र और सुश्री अनुप्रिया मुख्य प्रबंधक बी के टी शाखा.

दि. 08 नवंबर 2021 को छिंदवाडा में माननीय कार्यपालक निदेशक श्री ए.के.श्रीवास्तव जी की उपस्थिति में कलेक्टर छिंदवाडा श्री सौरभ कुमार के आतिथ्य में क्रेडिट आऊटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

दिनांक 25.11.2021 को पटना में क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में, कार्यपालक निदेशक श्री अलोक श्रीवास्तव, फील्ड महाप्रबंधक श्री बी.एस.हरिलाल, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री राजीव रंजन सिन्हा एवं स्टाफ सदस्य तथा ग्राहकगण.

कामरूप जिले के डीसी कार्यालय और एलडीएम कार्यालय के संयुक्त समन्वयन से सभी बैंकों को शामिल कर 'ऋण आउटरीच कार्यक्रम' का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में डॉ. भगवत कृष्णराव कराड, राज्य मंत्री, वित्त मंत्रालय मुख्य अतिथि, साथ में दिखाई दे रहे हैं श्री बी. केशव राव, मुख्य प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी.

गुवाहाटी क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित 'क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम' में बैंक के फील्ड महाप्रबंधक, कोलकाता श्री डी एन राजेन्द्र कुमार, श्री वी के श्रीवास्तव उप आंचलिक प्रबंधक, श्री सी पी सिंह क्षेत्रीय प्रबंधक गुवाहाटी, श्री सतीश मंडलिक मुख्य लेखा परीक्षक गुवाहाटी.

दिनांक 25.11.2021 को पटना में क्रेडिट आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में, कार्यपालक निदेशक श्री अलोक श्रीवास्तव, फील्ड महाप्रबंधक श्री बी.एस.हरिलाल, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री राजीव रंजन सिन्हा एवं स्टाफ सदस्य तथा ग्राहकगण.

सरदार उधम सिंह (26 दिसम्बर 1899 - 31 जुलाई 1940)

सरदार उधम सिंह भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे. उन्होंने जलियांवाला बाग कांड के समय पंजाब के गर्वनर जनरल रहे माइकल ओ' ड्वायर को लन्दन में जाकर गोली मारी थी.

अधिक संपन्न होने पर भी जो असंतुष्ट रहता है, वह सदा निर्धन है - अश्वघोष

बैंक के इर्द-गिर्द

हमारे माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय का जयपुर दौरे के दरम्यान स्वागत करते हुए फील्ड महाप्रबंधक श्री वी.के. महेंद्रू, आं.का., दिल्ली

9 नवंबर, 2021 को श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक, भोपाल प्रवास के दौरान स्टाफ को संबोधित करते हुए. इस अवसर पर उनके साथ उपस्थित हैं श्री एस डी माहुरकर, फील्ड महाप्रबंधक, श्री अतुल सहाय, उप आंचलिक प्रबंधक एवं श्री आर.सी. गोयल, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक भोपाल.

व्यवसाय समीक्षा बैठक के दौरान माननीय श्री राजीव पुरी जी, कार्यपालक निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण, साथ में श्री वी वी नटराजन, फील्ड महाप्रबंधक चंडीगढ तथा क्षेत्रीय प्रबंधक अमृतसर उपस्थित है.

पुणे अंचल द्वारा हमारे माननीय कार्यपालक निदेशक महोदय श्री राजीव पुरी जी की अध्यक्षता में आयोजित ग्राहक बैठक, साथ में फील्ड महाप्रबंधक री मुटरेजा जी.

करतार सिंह सराभा (24 मई 1896 - 16 नवंबर 1915)

करतार सिंह सराभा एक भारतीय क्रांतिकारी थे. जब वे ग़दर पार्टी के सदस्य बने तब वे 15 वर्ष के थे; वह तब एक प्रमुख प्रकाशमान सदस्य बन गए और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए लड़ना शुरू कर दिया. वह आंदोलन के सबसे सक्रिय सदस्यों में से एक थे. नवंबर 1915 में लाहौर में, जब वह 19 वर्ष के थे, तब उन्हें आंदोलन में उनकी भूमिका के लिए मार दिया गया था.

बैंक के इर्द-गिर्द

दिनांक 5 अक्टूबर, 2021 को श्री राजीव पुरी, कार्यपालक निदेशक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया भोपाल प्रवास के दौरान टाउन हॉल बैठक में स्टाफ को संबोधित करते हुए. इस अवसर पर मंच पर उपस्थित है श्री एस डी माहुरकर, फील्ड महाप्रबंधक, भोपाल अंचल.

दिनांक 11 अगस्त 2021 को आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़ के फील्ड महाप्रबंधक, श्री वी.वी. नटराजन जी ने क्षेत्रीय कार्यालय रोहतक के अंतर्गत आने वाली जाट कॉलेज शाखा में विज़िट की. इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, रोहतक के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री धीरज गोयल और शाखा के स्टाफ सदस्य.

क्षेत्रीय कार्यालय, रोहतक के अंतर्गत आने वाली साँजरवास शाखा में गाँव के पंचायत भवन में महाप्रबंधक एच.एस.गरसा जी की अध्यक्षता में किसान संपर्क अभियान का आयोजन किया गया.

दि. 12.10.2021 को शाखा राप्तीनगर, क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर में कियोस्क पासबुक प्रिंट मशीन का उद्घाटन करते हुए श्री एल. बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री सुनील कुमार, व.प्र./ आई.टी.,श्री धर्मेन्द्र कुमार, शाखा प्रबंधक राप्तीनगर.

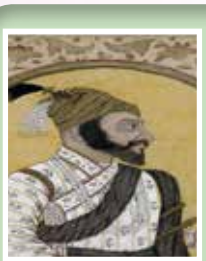

छत्रपति शिवाजी महाराज (1630-1680 ई.)

छत्रपति शिवाजी महाराज भारत के एक महान राजा एवं रणनीतिकार थे जिन्होंने 1674 ई. में पश्चिम भारत में मराठा साम्राज्य की नींव रखी. इसके लिए उन्होंने मुगल साम्राज्य के शासक औरंगज़ेब से संघर्ष किया. सन् 1674 में रायगढ़ में उनका राज्याभिषेक हुआ और वह छत्रपति बने. छत्रपती शिवाजी महाराज ने अपनी अनुशासित सेना एवं सुसंगठित प्रशासनिक इकाइयों कि सहायता से एक योग्य एवं प्रगतिशील प्रशासन प्रदान किया.

धैर्यवान और बुद्धिमान मनुष्य के लिए शोक, विलाप और रुदन सभी अवस्थाओं में त्याग देने योग्य हैं - वाल्मिकि

भारत के सबसे युवा क्रांतिकारी शहीद खुदीराम बोस का जीवन-वृत्त

आज़ादी का अमृत महोत्सव

- राजीव तिवारी
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, पुणे

खुदीराम बोस देश के सबसे युवा और महान क्रांतिकारी थे, जिन्होंने देश की आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों की आहुति दे दी थी. खुदीराम बोस के बलिदान से पूरे देश में आजादी पाने की इच्छा और अधिक ज्वलंत हो गई थी और देशवासियों के अंदर राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित हो गई थी खुदीराम बोस एक ऐसे क्रांतिकारी थे, जिनके सामने जाने से अंग्रेज तक खौफ खाते थे.

खुदीराम बोस का जन्म और प्रारंभिक जीवन

खुदीराम बोस का जन्म पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के हबीबपुर गांव में 3 दिसंबर, 1889 को हुआ था. उनके पिता का नाम त्रिलोकी नाथ बोस था और माता का नाम लक्ष्मी प्रिया था. छोटी आयु में ही खुदराम बोस के सिर से मां-बाप का साया उठ गया था, जिसके बाद बड़ी बहन ने उनकी परवरिश की थी.

खुदीराम ने अपनी शुरुआती पढ़ाई हेमिल्टन हाईस्कूल से की थी. खुदीराम बोस के मन में बचपन से ही देशभक्ति की भावना थी, इसलिए उन्होंने स्कूल के दिनों से ही राजनैतिक गतिविधियों में हिस्सा लेना शुरु कर दिया था. साथ ही वे उस दौरान ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ होने वाले आंदोलनों में शामिल होने लगे थे. उस दौरान अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचारों और जुर्म को देखकर उनके मन में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ इतनी नफरत पैदा हो गई थी कि उन्होंने अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद करवाने की ठान ली और अपनी पढ़ाई छोड़ वे देश के स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े.

खुदीराम बोस के क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत

साल 1905 में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ बंगाल विभाजन के विरोध में चल रहे आंदोलनो में खुदीराम बोस ने अपना पूरा समर्थन दिया और इसके बाद उन्होंने खुद को पूरी तरह स्वाधीनता आंदोलन में समर्पित कर दिया. इसके उपरांत आजादी की इस लड़ाई के सबसे शक्तिशाली और युवा क्रांतिकारी के रुप में उभर कर सामने आए एवं उस समय देश के कई युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बने. इसके बाद वे रिवोल्यूशनरी पार्टी में शामिल हुए.

साल 1906 में जब खुदीराम बोस अंग्रेजों द्वारा बैन मैग्जीन ''सोनार बांग्ला'' बांट रहे थे, तब उन्हें ब्रिटिश पुलिस अधिकारियों ने

रानी लक्ष्मीबाई (19 नवम्बर 1828-18 जून 1858)

रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 की राज्यक्रान्ति की द्वितीय शहीद वीरांगना थीं. वे अंगेजों की सभी कोशिशों के बावजूद अपने राज्य की रक्षा हेतु प्रतिबद्ध थीं. रानी लक्ष्मीबाई की अदम्य और अद्वितीय साहस को भारतीय नारी समाज के गौरव और बीरता का प्रतीक माना जाता है. उन्होंने सिर्फ 29 वर्ष की उम्र में अंग्रेज साम्राज्य की सेना से युद्ध किया और रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुईं. आज भी उनकी वीरता के गीत इस देश के कोने कोने में गाये जाते हैं.

गिरफ्तार कर लिया, हालांकि उस समय खुदीराम अंग्रेज अधिकारी को घायल करके भागने में कामयाब हो गए.

इस घटना के बाद साल 1907 में उन्होंने पुलिस स्टेशनों के पास बम ब्लास्ट किए, डाकघरों को लूटा, अंग्रेज अफसरों पर हमले किए और तमाम अन्य क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया. जिसके बाद उन पर राजद्रोह का केस चल गया, लेकिन नाबालिग होने की वजह से उन्हें बाद में छोड़ दिया गया.

ब्रिटिश मेजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड को समाप्त करने की योजना

कोलकाता में उन दिनों चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट के पद पर किंग्सफोर्ड था, जो बेहद सख्त और क्रूर अधिकारी था एवं वह भारतीय क्रांतिकारियों के खिलाफ अपने सख्त फैसलों के लिए जाना जाता था. उसके अत्याचारों से त्रस्त आकर युगांतर दल के नेता वीरेन्द्र कुमार घोष ने किंग्सफोर्ड को मारने की साजिश रखी. इसके लिए उन्होंने खुदीराम बोस एवं प्रफुल्ल चाकी को चुना. खुदीराम बोस एवं प्रफुल्ल चाकी दोनों इस काम को पूर्ण करने के उद्देश्य से मुजफ्फरपुर पहुंच गए और किंग्सफोर्ड की दैनिक गतिविधियों पर नजर रखने लगे. दिनांक 30 अप्रैल,1908 को रात के अंधेरे में किंग्सफोर्ड द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली जैसी एक बग्घी सामने से आती हुई देखी तो खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने उस पर बम फेंक दिया. लेकिन दुर्भाग्यवश इस घटना में किंग्सफोर्ड की पत्नी और बेटी मारीं गईं. लेकिन खुदीराम और उनके साथी ने समझा कि वे किंग्सफोर्ड को मारने में सफल हो गए, इसलिए आनन-फानन में वे दोनों क्रांतिकारी घटनास्थल से भाग निकले.

इस घटना के बाद खुदीराम के साथी प्रफुल्ल चाकी ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा घेर लिए गए, जिसे देख उन्होंने स्वयं को गोली मारकर शहीद हो गए. इसके बाद खुदीराम को ब्रिटिश पुलिस अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर हत्या का मामला दर्ज किया गया. गिरफ्तारी के बाद भी खुदीराम बोस अंग्रेज अफसरों से डरे नहीं, बल्कि उन्होंने किंग्सफोर्ड को हत्या का प्रयास करने का अपना अपराध कबूल कर लिया. जिसके चलते इस युवा क्रांतिकारी को 13 जुलाई, साल 1908 में कोर्ट द्वारा फांसी की सजा का ऐलान किया गया. दिनांक 11 अगस्त, 1908 को इस निर्भीक क्रांतिकारी को फांसी के फंदे से लटका दिया गया. इस तरह खुदीराम अपनी जीवन की आखिरी सांस तक देश की आजादी के लिए लड़ते रहें और अपनी प्राणों की आहुति दे दी.जब उन्हें फांसी दी गई, जब उनकी उम्र महज 19 साल थी. वहीं देश के इस युवा क्रांतिकारी के बलिदान के बाद लोगों के अंदर अंग्रेजों के विरूद्ध और अधिक गुस्सा बढ़ गया एवं तमाम युवाओं ने देश की आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया.

खुदीराम बोस 'स्वाधीनता संघर्ष का महानायक'

खुदीराम जी द्वारा देश की आजादी के लिए दिए गए त्याग, बलिदान एवं साहसिक योगदान को अमर रखने के लिए कई गीत भी लिखे गए और इनका बलिदान लोकगीतों के रुप में मुखरित हुए. इसके अलावा इनके सम्मान में कई भावपूर्ण गीतों की रचना हुई, जिन्हें बंगाल के गायक आज भी गाते हैं. देश के इस युवा महान क्रांतिकारी के लिए देशवासियों के ह्दय में अपार सम्मान और प्रेम है साथ ही इनका जीवन लोगों के अंदर राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करता है. खुदीराम बोस के बलिदान ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई धार दी और फिर कई बरसों की लड़ाई के बाद देश को आजादी प्राप्त हुई. खुदीराम बोस को आज भी सिर्फ बंगाल में ही नही बल्कि पूरे भारत में याद किया जाता है. भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में कई कम उम्र के शूरवीरों ने अपनी जान न्यौछावर की, जिसमें खुदीराम बोस का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है. निश्चित ही जब-जब भारतीय आज़ादी के संघर्ष की बात की जाएंगी तब-तब खुदीराम बोस का नाम गर्व से लिया जाएगा. धन्य है भारत की धरती जहां इस महापुरुष ने जन्म लिया.

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा'

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (11 नवंबर, 1888 - 22 फरवरी, 1958)

वे कवि, लेखक, पत्रकार और भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे. वे महात्मा गांधी के सिद्धांतो का समर्थन करते थे. हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए खिलाफत आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही. 1923 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सबसे कम उम्र के प्रेसीडेंट बने. आजादी के बाद वे भारत के पहले शिक्षा मंत्री बने.

जिस देह से श्रम नहीं होता, पसीना नहीं निकलता, सौंदर्य उस देह को छोड़ देता है - लक्ष्मीनारायण मिश्र

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मध्यप्रदेश का जननायक टंट्या भील उर्फ 'टंटिया मामा'

- राजेश कुमार
आशु अधिकारी-प्रबन्धक
आंचलिक कार्यालय, भोपाल

टंट्या भील का जन्म 1840 में तत्कालीन मध्य प्रांत के पूर्वी निमाड़ (खंडवा) की पंधाना तहसील के बडाडा गांव में हुआ था. मध्यप्रदेश का जननायक टंट्या भील आजादी के आंदोलन के उन महान नायकों में शामिल है जिन्होंने आखिरी साँस तक फिरंगी सत्ता की ईंट से ईंट बजाने की मुहिम जारी रखी थी. वह भील समुदाय के अदम्य साहस, चमत्कारी स्फूर्ति और संगठन शक्ति के प्रतीक थे. अदम्य साहस के स्वस्फूर्त स्वभाव के उदाहरण बन गए. इसीलिए अंग्रेज सरकार उन्हें 'इंडियन रॉबिनहुड' कहती थी. वह अंग्रेजों की छत्रछाया में फलने फूलने वाले जमाखोरों से लूटे गए माल को भूखे-नंगे और शोषित आदिवासियों में बाँट देते थे. वह गरीबों के मसीहा थे. वह अचानक ऐसे समय लोगों की सहायता के लिए पहुँच जाते थे, जब किसी को आर्थिक सहायता की जरूरत होती थी. वह गरीब-अमीर का भेद हटाना चाहते थे. वह छोटे-बड़े सबके मामा थे. उनके लिए मामा संबोधन इतना लोकप्रिय हो गया कि प्रत्येक भील आज भी अपने आपको मामा कहलाने में गौरव का अनुभव करता है.

गुरिल्ला युद्ध के इस महारथी ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में लगातार 15 साल तक अंग्रेजों के दाँत खट्टे करने के लिए अभियान चलाया. अंग्रेजों की नजर में वह डाकू और बागी थे क्योंकि उन्होंने उनके स्थापित निजाम को तगड़ी चुनौती दी थी.

वे भीलों के समाजवादी सपने को साकार करना चाहते थे. उन्हें देश की गुलामी बर्दाश्त नहीं थी. वह बार-बार जेल के सींखजों को तोड़कर भाग जाते थे. छापामार युध्द में वह निपुण थे. उनका निशाना अचूक था. वे भीलों की पारंपरिक धनुविद्या में निपुण थे. 'दावा' यानी फालिया उनका मुख्य हथियार था. उन्होंने बंदूक चलाना भी सीख लिया था. युवावस्था से लेकर अंत समय तक टंट्या भील का सारा जीवन जंगल, घाटी, बीहडों और पर्वतों में अंग्रेजों और होलकर राज्य की सेना से लोहा लेते बीता. टंट्या निमाड़ अंचल के घने जंगलों में पले-बढ़े थे और अंचल के आदिवासियों के बीच शोहरत के मामले

नाना साहेब (मई 19, 1824 - सितम्बर 24, 1859)

नाना साहेब सन 1857 के भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम संग्राम के शिल्पकार थे. उनका मूल नाम 'धोंडूपन्त' था. 1857 स्वतन्त्रता संग्राम में नाना साहेब ने कानपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध नेतृत्व किया.

में दंतकथाओं के नायकों को भी मात देते हैं, हालाँकि उनकी कद-काठी किसी हीमैन की तरह नहीं थी. दुबले-पतले मगर कसे हुए और फुर्तीले बदन के मालिक टंट्या सीधी-सादी तबीयत वाले थे. टंट्या ने अंग्रेज साम्राज्य और होल्कर राज्य की शक्तिशाली पुलिस को बरसों छकाया और उनकी पकड़ में नहीं आए. टंट्या की सहायता करने के अपराध मे हजारों व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया तथा सैकडों को जेल भेजा गया.

किशोरावस्था में ही उनकी नेतृत्व क्षमता सामने आने लगी थी और जब वह युवा हुए तो आदिवासियों के अद्वितीय नायक के रूप में उभरे. उन्होंने अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए आदिवासियों को संगठित किया. बेहद गरीब घर में पैदा हुए. टंट्या धीरे-धीरे अंग्रेजों की आँख का काँटा बन गये. मध्य प्रदेश के टंट्या भील एक ऐसा ही आदिवासी युवक था जिसने अकेले ही पूरे अंग्रेजी साम्राज्य की नींद उड़ा दी थी, ऐसा माने कि टंट्या भील ने देश की आजादी का बिगुल फूँक दिया था.

टंट्या आदिवासी भील समुदाय के सदस्य थे उनका वास्तविक नाम टंड्रा था, उनसे सरकारी अफसर एवं धनवान लोग काफी भयभीत थे, आम जनता उन्हें 'टंटिया मामा' कहकर उनका आदर करती थी . उन्होंने 1857 में हुए पहले स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेजों द्वारा किये गए दमन के बाद टंट्या को पहली बार 1874 के आसपास गिरफ्तार किया गया और एक साल की सजा काटने के बाद उनके जुर्म को चोरी और अपहरण के गंभीर अपराधों में बदल दिया गया. सन 1878 में दूसरी बार उन्हें हाजी नसरुल्ला खान यूसुफजई द्वारा गिरफ्तार किया गया था. मात्र तीन दिनों बाद वे खंडवा जेल से भाग गए और एक विद्रोही के रूप में शेष जीवन व्यतीत किया. अंग्रेजों को उन्हें पकड़ने में करीब सात साल लग गए. लेकिन 11 अगस्त 1889 को रक्षाबंधन के अवसर पर मुँहबोली बहन के घर जीजा गणपत द्वारा किए गए विश्वासघात के कारण उन्हें धोखे से गिरफ्तार कर लिया गया. टंट्या को ब्रिटिश रेसीडेन्सी क्षेत्र में स्थित सेन्ट्रल इन्डिया एजेन्सी जेल (सी.आई.ए.) इन्दौर में रखा गया था. बाद में उन्हें जबलपुर ले जाया गया, उनकी एक झलक पाने के लिए जगह-जगह जनसैलाब उमड़ पड़ा. टंट्या को बड़ी-बड़ी भारी बेड़ियां डालकर और जंजीरों से जकड़कर जबलपुर की जेल में बंद रखा गया जहां अंग्रेजी हुक्मरानों ने उन्हें भीषण नरकीय यातनांए दीं और उन पर भारी अत्याचार किए. टंट्या को 19 अक्टूबर 1889 को सेशन न्यायालय जबलपुर ने फांसी की सजा सुनाई. और 4 दिसंबर 1889 को उसे फांसी दे दी गई. हालांकि यह भी मान्यता है कि जनविद्रोह के डर से टंट्या को कब और किस तारीख को फांसी दी गई यह आज भी अज्ञात है. आम मान्यता है कि फाँसी के बाद टंट्या के शव को इंदौर के निकट खण्डवा रेल मार्ग पर स्थित पातालपानी (कालापानी) रेल्वे स्टेशन के पास ले जाकर फेंक दिया गया था. वहाँ पर बनी हुई एक समाधि स्थल पर लकड़ी के पुतलों को टंट्या मामा की समाधि माना जाता है. आज भी सभी रेल चालक पातालपानी पर टंट्या मामा को सलामी देने कुछ क्षण के लिए रेल को रोकते हैं.

मध्यप्रदेश सरकार ने जनजाति प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एक लाख रूपए का जननायक टंट्या भील सम्मान स्थापित किया है. यह सम्मान शिक्षा तथा खेल गतिविधियों में उपलब्धि हासिल करने वाले प्रदेश के एक आदिवासी युवा को प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है.

तात्या टोपे (16 फरवरी 1814 - 18 अप्रैल 1859) - महाराष्ट्र का बाघ

तात्या टोपे भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के एक प्रमुख सेनानायक थे. सन् सत्तावन के विद्रोह की शुरुआत 10 मई को मेरठ से हुई थी. उस रक्तरंजित और गौरवशाली इतिहास के मंच से झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब पेशवा, राव साहब, बहादुरशाह जफर आदि के विदा हो जाने के बाद करीब एक साल बाद तक तात्या विद्रोहियों की कमान संभाले रहे.

सरलतापूर्वक कहे गए वचन को अन्यथा नहीं लेना चाहिए - अश्वघोष

आज़ादी का अमृत महोत्सव

उस दिन मैंने भी पतंग काटी थी....

- आनंद कुमार
वरिष्ठ प्रबन्धक (मासवि)
दक्षिण मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

बहुत दिन बाद मायके आयी थी कविता, तो बचपन की यादें ताज़ा हो गयी थी. चारों भाई बहन मिल कर नयी पुरानी बतिया रहे थे. तभी अचानक सुनील को बचपन का किस्सा याद आया, ''मम्मी कुछ भी काम करती तो हम लोग कैसे आस-पास ही बैठते या साड़ी पकड़ के पीछे-पीछे घूमा करते थे. तब 'उजाला' या तो आया ही नहीं था या शायद हम गाँव वाले ही अनजान थे उजाला सफेदी से. नील का बड़ा बोतल आता था जो महिनों चलता था. मम्मी कपड़े धोने के बाद आधा ढक्कन नील एक बाल्टी में घोल कर सफेद कपड़े उस से निकाला करती. हम रोज ही मम्मी को ऐसा करते देखते थे और दोनों चुन्नू-मुन्नू तुतलाते हुए बतियाते कि मम्मी कितना काम करती हैं. हम नन्हें बालक मम्मी की खूब मदद करते काम में, इतनी कि मत पूछिए. बस इतना जान लिजिए कि गर हम मदद न करें तो वही काम दो घण्टे पहले निपट सकता था. उस दिन भी हम तो बस काम निपटवा रहे थे. मम्मी की मदद के लिए तो तन-मन-धन से हमेशा तैयार, तो हम समझदारों ने नील की बोतल उठायी और टँकी के पानी में उलट दी, मम्मी का रोज का झंझट खत्म ! उस दिन मैं बहुत पिटा था!''

तभी सुनीता बोली , ''भाई और मैं, उस दिन हमेशा की तरह सीढ़ी पर रेस लगा रहे थे. सीढ़ी संकरी होने की वजह से भाई के हाथ से धक्का लगा और चोट लग गयी. थोड़ा रोए-धोए, फिर लग गए अपने होमवर्क में. करीब 2-3 घण्टे बाद मम्मी आयी. हमने कॉपी-पेन छोड़ जो दहाड़ मार के रोना-गाना शुरू किया, मत पूछिए, और हम नाटक नहीं कर रहे थे, दर्द सच में मम्मी को देख एकदम से उभर आया था. मम्मी के पास तब हर तकलीफ का एक ही इलाज हुआ करता था ''आयोडेक्स'' जादू आयोडेक्स में था या मम्मी के हाथों में ये तब नहीं जानते थे. आयोडेक्स के साथ माथे पर 2-3 चुम्मी और मम्मी का भाई सुनील को घूर के देखना, बस कलेजे को जो ठंडक मिलती थी, क्या बताएँ!! दर्द और माँ का भी एक रिश्ता होता हैं शायद. दर्द में कराहो तो चीख की आखिरी गूँज माँ..... होती हैं. खाना बनाते थोड़ा-सा कभी जल जाए कभी कहीं छोटी-मोटी चोट लग जाए तो मम्मी को बताए बिना चैन नहीं मिलता. उसके प्यार भरे लफ्ज जैसे हर घाव भर देंगे... कहते कहते सुनीता की आँख भर आयी थी.''

अरे याद है भैया , ''चिप्स खाओगी क्या?'' तुमने पूछा था और मैंने हाँ में गर्दन हिला दी थी. तो 20 रूपये ले जाऊँ तुम्हारे पर्स से कहते-कहते तुमने पैसे निकाले और चल दिए. मैं बहुत देर सोचती यही कि ये अभी तक आया क्यों नहीं, एक घण्टे बाद तुम अपने गाल सहलाते हुए आए और बोले, ''दाढी बनवाने के आजकल

डॉ एनी बेसेन्ट

डॉ एनी बेसेन्ट अग्रणी आध्यात्मिक, थियोसोफिस्ट, महिला अधिकारों की समर्थक, लेखक, वक्ता एवं भारत-प्रेमी महिला थीं. सन 1917 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षा भी बनीं. एनी बेसेंट से प्रेरणा पाकर भारत के कई समाज सेवकों को बल मिला.

20 रूपये लेने लगा हैं'' सुनते ही चारों भाई बहन ठहाके मार कर हंसने लगे.

तभी बड़ी दीदी कहीं खो गयी, और कहने लगी, 'तब खाने के महक भर से जोरों की भूख लग जाया करती थी और मम्मी की छोटी-सी रसोई में हम चारों किसी तरह घुस कर बैठने की जगह बना लेते थे. एक-एक फुलका जब तवे पर फूलता था, हम ललचाई नजरों से एक-दूसरे को देख कयास लगाते कि ये चारों में से किसे मिलने वाला हैं!! जिसकी थाली में फुलका वो मम्मी का ज्यादा लाडला!! आँखें मटकाते खुद को विजेता घोषित करता और ये संघर्ष पेट भरने तक जारी रहता. मुझे याद नहीं कि कभी मसालेदार या स्पेशल खाना बना हो, सादा खाना ही बना हैं हमेशा. लेकिन स्वाद ऐसा कि लिखते हुए भी मुँह में पानी आ रहा हैं. उस दिन भी हम रसोई में बैठे खाना बनने का बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे. मम्मी ने छौंक लगाने को जीरे की डिब्बी उठायी और ये क्या !! गलती से पूरा जीरा कड़ाई के गरम तेल में उलट गया. मम्मी के आँखों में आँसू आ गए. भरे गले से बुदबुदा रही थी 'इतना जीरा और 10 दिन आराम से चल सकता था,' फिर हम पर चिल्ला कर रसोई से बाहर निकाल दिया. मुझे कुछ दिन पहले चाचा के घर का वाकया याद आ रहा था. उस दिन चाची के हाथ से भी तो पूरा जीरा गिर गया था पर वो कितना हँसी थीं और डस्टबिन में फैंक कर कपाट से और जीरा निकाल अपना डिब्बा फिर भर लीं थीं.

माहौल थोड़ा सीरियस होता देख छुटकी बोली, ''मम्मी को लगता था चौथी-पाँचवीं क्लास में भी चौबीस घण्टे पढ़ने से कलेक्टर बन जाएँगे, सो हमने बचपन सिर्फ पढ के गुजारा हैं. मैडम जी खुद नहीं पढी तो पूरी कसर हम ही से निकाल रहीं थी. ना कोई दोस्त था और ना ही कोई खेल. मकर संक्रांति को दोनों भाई छत पर पतंग उड़ा रहे थे. मम्मी की परमिशन से हम भी थोड़ी देर छत पर गये. आसमान उस दिन नीला नहीं, सतरंगी था. भाई की पतंग एक-एक कर के पड़ौसियों की पतंगों को काटते हुए जैसे पूरे आसमान में अपना साम्राज्य फैलाने का प्रण लिए थी. हम भी मचल उठे पतंग उड़ाने को. चुँकि उड़ाना आता नहीं था तो भाई से जिद करने लगे थोड़ी देर के लिए ही सही डोर हाथ में दें दें. बहुत मिन्नतों के बाद भी जब नहीं मानें तो मम्मी-पापा को आवाज लगाई, बदकिस्मती से दोनों कहीं बाहर चले गये थे. बस फिर क्या था!! नीचे गये, दोनों हाथ पीछे किये फिर ऊपर आकर पूछा ''आखिरी बार पूछ रही हूँ, दे रहे हो क्या?'' दोनों हँसने लगे हमने पीछे छिपा रखी कैंची आगे कि और पतंग की डोर काट दी.

शादी के बाद साल में कुछ ही दिन तो मिलते है, जब हम अपना बचपन जी लेते हैं.

दुर्गावती देवी

दुर्गावती देवी, जिन्हें दुर्गा भाभी के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थीं. वह उन कुछ महिला क्रांतिकारियों में से एक थीं जिन्होंने सत्तारूढ़ ब्रिटिश राज के खिलाफ सशस्त्र क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया.

मुक्ति शून्यता में नहीं, पूर्णता में है. पूर्णता सृजन करती है. ध्वंस नहीं करतीं - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

राजभाषा के प्रयोग के लिए
वित्तीय वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकक तथा आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप से खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/ उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें क. हिंदी सलाहकार समिति ख. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ग. राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	(सभी भाषिक क्षेत्रों में)	

संतुष्ट मन वाले व्यक्ति के लिए सभी दिशाएं सुखमयी हैं - भागवत

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए ''केंद्रित'' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

कतारों से मुक्ति पाइये
डिजिटल बैंकिंग अपनाइये
Choose freedom from queues
Choose digital banking

हो डिजिटल. हो कैशलेस.
GO DIGITAL. GO CASHLESS.

अपनी सुविधा के लिए हमारी डिजिटल बैंकिंग का उपयोग करें एवं एक क्लिक से निर्बाध एवं आनंददायी बैंकिंग का आनंद लें

Use our digital banking facilities for your convenience and enjoy seamless, delightful banking with a click.

— आपके डिजिटल होने में सहायता हेतु वचनबद्ध COMMITTED TO HELP YOU GO DIGITAL —

हमें लाइक करें / Like us on: https://www.facebook.com/CentralBankofIndiaMumbai • हमें फॉलो करें / Follow us on: https://twitter.com/centralbank_in

www.centralbankofindia.co.in